मानव मशीनगन बना आज,
मानवता रह गई नारों में।
सारी खुशियां कैद हो गई,
एटम के गुब्बारों में॥

खाने को उग रहे आज यहां,
हथियार गोलियां हथगोले।
अनाज नहीं पर नाज करो,
इनसे भरकर खाली झोलें॥

आतंक, तस्करी ड्रग्स बनें,
जीवन के अंग, अभिन्न।
मानस पर उभरा इसीलिए,
फिर से एक प्रश्न-चिन्ह॥

एक प्रश्न जो अपने ही चिन्ह में
उत्तर तलाश रहा है।

? ? ?

प्रश्न–चिन्ह

[सहज–मचीय, हास्य व्यग्य के तीन नाटक]

लेखक

मदन शर्मा

अरुणोदय

जयपुर

— पता —
975 गली नानाजी
रास्ता गोपाल जी
जयपुर — 302 003

प्रथम सस्करण — 1991
मूल्य — पचास रुपये

— प्रकाशक —

अरुणोदय
975 गली नानाजी
रास्ता गोपाल जी
जयपुर — 302 003

कम्पोज — नरेन्द्र कुमावत
मुद्रण — फोटोसेट (इण्डिया)
404, सूर्या चेम्बर्स, जयपुर
टेलिफोन 560709



राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

अपने उद्‌गार

बहुत छोटा था मैं उस समय । घर के पीछे मैदान मे रामलीला हो रही थी । मैं हर दिन देखने जाता था । कलाकारो के अभिनय ने मुझे बहुत प्रभावित किया था । मेरे लिये वे सभी महान् बन गये थे । एक दिन पिताजी ने पूरी मण्डली को खाने पर बुलाया । सभी कलाकार घर मे मौजूद थे । अपने घर मे उन महान् कलाकारो को इतने क़रीब पाकर मुझे जो प्रसन्नता हो रही थी, मैं उसे व्यक्त नहीं कर सकता हूँ । नाटक के प्रति आकर्षण का वह प्रथम बीज था ।

वक्त ने करवट बदली और बडा होकर मैं जुड गया आकाशवाणी से । सोभाग्य मे रेडियो नाट्य-विधा से । फिर एक निरन्तरता बनती चली गयी । सीखा, सोचा, समझा, लिखा, पढ़ा, किया और खूब किया ।

सस्कृत साहित्य मे नाटक को "पचम वेद" कहा गया है । इतिहास, ज्ञान, शिल्प, कला, अभिनय और कथा आदि सब कुछ इसमे निहित है । इसीलिये इसे वाड्मय कहा जाता है । भरत मुनि ने नाट्य कला के 10 भेद किये हैं ।

1	नाटक	6	व्यायोग
2	प्रकरण	7	समवकार
3	भाण	8	वीथी
4	प्रहसन	9	उपेक
5	डिम	10	ईहामृत

किन्तु समय के साथ-साथ नाट्य-कला मे भी परिवर्तन आ गया है । आज नाटक बदल गया है । कथा बदल गयी है । अभिनय बदल गया है । प्रस्तुति बदल गयी है । परिभाषा बदल गयी है । यही समय की माँग भी है ।

समय की सदा माँग यह भी रही है कि अच्छे नाटक हो । आज भी अच्छे नाटक होते हैं । सशक्त कथावस्तु भी है । अभिनय-कौशल भी है । शिक्षित अनुभवी कलाकार भी है । तकनीकी पक्ष भी उत्तम है । किन्तु फिर भी दर्शक नहीं हैं । जो हैं वे टिकिट खरीद कर दर्शक बनना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं । दर्शक स्वय को नाटक के साथ नहीं जोड़ पा रहा है किन्तु

अब नाटक ने स्वय को दर्शको के साथ जोड लिया है । नाटक आज दर्शको के द्वार पर पहुँच गया है । यह एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है अपनी पहचान बनाये रखने का ।

किन्तु इसके साथ ही साथ कई चुनौतियाँ भी उभर आयी हैं । पहले दर्शक प्रेक्षागृह मे बैठकर वही देखता था जो कुछ निर्देशक और कलाकार उसे दिखाना चाहते थे । किन्तु आज वह दिखाना है जो कुछ दर्शक देखना चाहता है एक श्रेष्ठ नाटक के माध्यम से ।

नाटको मे श्रेष्ठता की परिभाषा भी आज बदल गयी है । श्रेष्ठ नाटक कौन-सा होता है ? जिसम जीवन का यथार्थवादी चित्रण हो या यथार्थ का चित्रण साधारण फोटो फ्रेम न होकर "एब्सट्रक्ट" विकृत व्याकृत या विरूप हो?

नाटक की श्रेष्ठता सहज बोधगम्यता मे हो या शब्दो मे हो ? जैसे कवित्तमय, शुद्ध अलकृत, अर्थपूर्ण या सारगर्भित शब्द ? सैट प्रधान हो या सेट प्रतीक या कलाकारो व निर्देशक की कलाबाज़ी हो ?

आसान नहीं है आज के नाटक को किसी परिभाषा मे पिरोना । आज नाटक जब आम आदमी के बीच पहुँचता जा रहा है तो मोटेतौर पर यही कहा जा सकता है कि वही नाटक श्रेष्ठ है जो सहज हो । जिसमे गति हो । जो रुचिकर हो, और जो कुछ कलाकार या निर्देशक कहना चाहते हैं, वह आसानी से दर्शको की समझ मे आ जाये ।

इन्हीं बातो को ध्यान मे रखकर मैंने नाटक लिखे हैं । कहाँ तक सफल रहा हूँ, इसका निर्णय मैं स्वय नहीं कर सकता । किन्तु इस बात की प्रसन्नता है कि इनके प्रकाशन से पूर्व ही ये मचित हो चुके हैं, पुरस्कृत हो चुके हैं और दूसरी भाषा मे अनुवाद भी हो चुका है ।

लेखक

—क्रम—

1 आगत की प्रतीक्षा

2 प्रश्न चिन्ह

3 रोशनी और रक्तबीज

—आगत की प्रतीक्षा—

1 अखिल हाडौती नाट्य प्रतियोगिता
''सर्वश्रेष्ठ नाटक'' (1975)

2 अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता रामनगर (नैनीताल)
(द्वितीय सर्वश्रेष्ठ नाटक)
[श्रीराम कला केन्द्र कोटा द्वारा प्रस्तुत]

3 गुजराती मे अनुवाद— यारे उगशे अे प्रभात

— आगत की प्रतीक्षा —

पात्र

1 मदारी
2 जमूरा
3 नेता
4 विरोधीराम
5 ऑफीसर
6 क्लर्क
7 चपरासी
8 सेठ
व
पाँच अन्य

आगत की प्रतीक्षा

(मच को एक बाज़ार का रूप दिया गया है । किन्तु भीड़ नहीं है । दाहिनी ओर से मदारी और जमूरा प्रवेश करते हैं । एक लम्बी रस्सी से दोनो बधे हैं । रस्सी का एक सिरा मदारी की बाँह पर बधा है और दूसरा सिरा जमूरे के पेट पर । आगे मदारी है पीछे जमूरा । जमूरा जानवरो की तरह चल रहा है ।)

मदारी — बेटा जमूरे ।
जमूरा — बाप मदारी ।
मदारी — मैं कौन ?
जमूरा — बडा आदमी ।
मदारी — तू कौन ?
जमूरा — छोटा इन्सान ।
मदारी — जो पूछूगा ?
जमूरा — नहीं बताऊँगा ।
मदारी — जहाँ भेजूँगा ?
जमूरा — नहीं जाऊँगा ।
मदारी — क्यो ?
जमूरा — पैट्राल के दाम बहुत बढ़ गये हैं ।
मदारी — लेकिन तुझे कार से नहीं हवा पर सवार होकर जाना है।
जमूरा — आज कल हवा भी अच्छी नहीं चल रही है मदारी ।
मदारी — वायुमण्डल का क्या हुआ ?
जमूरा — शुद्ध वायु चीनी की तरह सस्ती दरो पर विदेशो को भेज दी गयी ।
मदारी — और मण्डल ?
जमूरा — कमण्डल हो गया ।
मदारी — तब तो हमारा धन्धा भी चौपट हो गया । अरे लोग अभी तक हमारा तमाशा देखने इकट्ठे नहीं हुए ?
जमूरा — वा नहीं आयगे मदारी ।
मदारी — क्यो ?

जमूरा	—	शहर मे हमारे तमाशे से भी बड़ा तमाशा हो रहा है ।
मदारी	—	कौन–सा ?
जमूरा	—	आजकल सभाओ के अधिवेशन चालू है ।
मदारी	—	अच्छा हुआ लोग आये नहीं । आ जाते तो उन्हे तुम दिखाते क्या ?
जमूरा	—	हमेशा की तरह यह अपना भूखा पेट ।
मदारी	—	अरे तुमने अभी तक पेट पर रस्सी बाध रखी है ? खोल दो इसे ।
जमूरा	—	नहीं मदारी मै इसे नहीं खोलूगा ।
मदारी	—	क्यो ?
जमूरा	—	इसके खुलते ही मुझे भूख सताने लगती है ।
मदारी	—	भूख क्या होती है जमूरे ?
जमूरा	—	भूख एक वेदना होती है मदारी ।
मदारी	—	और वेदना क्या होती है ?
		(मदारी और जमूरा एक दूसरे की तरफ पीठ करके आगे के सवाद बोलते है । मदारी और जमूरा वाला लहजा भी इन सवादो मे नहीं आता है ।)
जमूरा	—	इसे तुम नहीं जानोगे । क्योकि इसे तुमने कभी महसूस नहीं किया । पिछले कई वर्षो से मै तुम्हारा पेट भरता आ रहा हूँ । किन्तु तुमने कभी मेरे पेट की तरफ ध्यान नहीं दिया । तुम्हारे जूठे बचे भात और रोटी के टुकडो से मेरा पेट नहीं भरता ।
मदारी	—	अधिक खाने से बदहज्मी हो जाती है ।
जमूरा	—	और भूख ना मिटने से इन्सान जल उठता है ।
मदारी	—	क्या तुम जल रहे हो ?
जमूरा	—	हाँ जल रहा हूँ और जला देना चाहता हूँ ।
मदारी	—	किसे ?
जमूरा	—	अपने पेट पर बधी इस रस्सी को ।
मदारी	—	जला क्यो नहीं डालते ?
जमूरा	—	इसी रस्सी से तो हम और तुम जुडे है । जिस दिन यह जल गई उस दिन हमारे सम्बन्धो का अस्तित्व ही मिट जाएगा ।

जमूरा — मेरा पेट भिच रहा है ।
मदारी — मै तुम्हारे पेट की नहीं खिचाव की बात कर रहा हूँ ।
जमूरा — हम अलग-अलग दिशाओ की ओर बढ़ रहे है । खिचाव आवश्यक है ।
मदारी — इसे कम कैसे किया जाये ?
जमूरा — एक ही दिशा मे सोच कर ।
मदारी — ठीक है, तुम मेरी दिशा मे आकर सोचो ।
जमूरा — तुम्ही मेरी दिशा मे आकर क्यो नही मोचते ?
मदारी — नहीं मैं नहीं साच सकता ।
जमूरा — तो फिर खिचाव को और बढ़ने दो ।
मदारी — आखिर इसका कोई अन्त तो होगा ।
जमूरा — अन्त है ।
मदारी — क्या ?
जमूरा — सघर्ष के बाद मुक्ति ।
मदारी — मुक्ति किससे ?
जमूरा — भूख मे   गरीबी से   बेकारी से ।

(दाहिनी तरफ से तीन-चार व्यक्ति नारे लगाते हुए निकलते है।)

एक   भूख एक अभिशाप है ।
दो — रोजी-रोटी चाहिए ।
तीन — तन ढकने को कपडा दो ।
चार — माँ बहनो की इज्जत नगी है ।

(नारे लगाते हुए लोग मदारी और जमूरे के चारो ओर चक्कर काटते हैं और फिर चले जाते हैं ।)

मदारी — ये क्या है जमूरे ?
जमूरा — सघर्ष की स्थिति ।
मदारी — ये लोग क्या चाहते हैं ?
जमूरा — साफ-सुथरा नेतृत्व ।
मदारी — वो कौन दे सकता है ?
जमूरा — एक ईमानदार इन्सान ।
मदारी — वह कहा बनता है ?

जमूरा — उसकी यहा कोई फैक्ट्री नहीं हे ।

मदारी — क्यो ?

जमूरा — यहाँ वही फैक्ट्री लगाई जाती है जिसके कल पुर्जे विदेशो ग मिलते हो । ईमानदारी के कल पुर्ज़े देशी हैं और देशी माल पर हमारे देशवासियो को विश्वास नहीं ।

मदारी — हूँ । हमको धन्धा मिल गया जमूरे ।

जमूरा — क्या ?

मदारी — हम यह फ़ैक्ट्री लगायेगे । ईमानदार इन्सान बनायेगे ।

जमूरा — एक बार फिर सोच लो मदारी । फैक्ट्री के लिए जगह का अलॉटमैन्ट बडी मुश्किल से होगा ।

मदारी — क्या ?

जमूरा — क्योकि तुम्हारी फैक्ट्री से आसपास के बुरे लोगो के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ेगा ।

मदारी — और ?

जमूरा — कच्चा माल बडी मुश्किल से मिलेगा ।

मदारी — ओर ?

जमूरा — इन्कम और सेल-टैक्स वाले परेशान करेगे ।

मदारी — और ?

जमूरा — यूनियनो की मागे माननी पडेगी ।

मदारी — ठीक है, हम उनका सामना करेगे ।

जमूरा — तो फिर चलो ।

(ज्योही मदारी और जमूरा घूमते हैं, दाहिनी ओर से पाँच छह लोग निकल कर मच के बीच मे घेरा बना लेते हैं और चारो ओर घूमते हैं । मदारी खडा रहता हे । जमूरा मशीन चलाने का अभिनय करता है। घेरे के लोग पहले मशीन की आवाज़ मुह से निकालते हैं फिर कुछ अस्पष्ट-सा ''   को वोट दो'' का नारा लगाते हैं । मशीन की आवाज़ और यह नारा कुछ क्षणो तक साथ-साथ चलते हैं । अन्त मे ''जीत गया भाई जीत गया'' की आवाज़े निकलती हैं । चक्कर काटते हुए लोग ठहर जाते हैं । बीच मे एक व्यक्ति 'नेता' खडा होता है, बाकी सब लोग घेरा तोड कर नेता के पीछे लाइन मे खड़े हो जाते हैं ।)

मदारी — देखो यह है हमारी फैक्ट्री की पहली प्रोडक्ट । ईमानदार इन्सान ।

(जमूरा नेता को गौर से देखता है ।)

जमूरा — क्या यही है ?

मदारी — हाँ ।

जमूरा — फार्मूला गलत हो गया मदारी ।

मदारी — कैसे ?

जमूरा — हमने तो ईमानदार इन्सान बनाने की सोची थी । यह तो भ्रष्ट नेता बन गया ।

मदारी — अच्छा ? जरूर देशी माल मे मिलावट थी ।

जमूरा — इसीलिए तो लोग देशी माल पर भरोसा नही करते हैं ।

मदारी — लेकिन अब क्या करे ?

जमूरा — करना क्या है ? यह माल विदेशो को निर्यात कर दो ।

मदारी — बाहर के देशो मे इस माल की कोई डिमान्ड नहीं है और फिर अभी हमारे पास एक्सपोर्ट लाइसेन्स भी नहीं है ।

जमूरा — फिर तो इसे हमको ही भुगतना पडेगा ।

मदारी — मगर इससे बात तो करे, हो सकता है माल अच्छा हो।

जमूरा — हॉ हॉ चलो ।

(मदारी और जमूरा घूमते हैं । तभी नेता मच के दाहिनी ओर आगे आकर खडा हो जाता है । उसके पीछे एक व्यक्ति आता है और नेता के पी ए का अभिनय करता है । नेता आगे खडा है । थोडा हट कर पी ए । मदारी और जमूरा आते हैं । पी ए से मूकाभिनय मे बात करते हैं । स्लिप लिखकर देते हैं । स्लिप लेकर पी ए नेता के पास जाता है।)

नेता — (स्लिप पढ़कर) भाई कमाल है । अभी हम पूरी तरह पैदा भी नहीं हुए और मिलने वाले आ पहुचे । खुर, भेज दो उन्हे ।

(पी ए आकर मदारी और जमूरे को अन्दर भेजता है। मदारी और जमूरा नेता को गौर से देखते हैं ।)

नेता — अरे भाई ! इस तरह क्या देख रहे हो ? हम ही नेता हैं। आप लोग कौन हैं ?

दोनो — हम आपके निर्माता हैं ।

नेता — ओह, समझे-समझे । आप लोग वोटर्स हैं । भाई आप लोगो ने बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी हमारे कन्धो पर डाल दी है । हम उसे पूरा करने का प्रयत्न करेगे । हाँ तो कहो, क्या चाहिए तुम्हे ?

मदारी — जी मुझे एक्सपोर्ट लाइसेन्स चाहिए ।

नेता — क्यो ?

जमूरा — ताकि हम आपको एक्सपोर्ट कर दे ।

नेता — हाँ, हमको भी विदेश भ्रमण का बहुत शौक है । हम तो स्वय विदेश जाने के बहाने तलाश करते रहते हैं । वैसे भी जिस चीज़ की हमारे देश मे बहुतायत हो, उसका निर्यात विदेशो को होना ही चाहिए ।

मदारी — इसीलिये मुझे एक्सपोर्ट लाइसेन्स चाहिये ।

नेता — सवाल यह नहीं है कि तुम्हे क्या चाहिये ? सवाल यह है कि हम क्या चाहते हैं ?

मदारी — आप क्या चाहते हैं ?

नेता — यह हमारा पी ए जानता है । पी ए , इन्हे बताओ, हम क्या चाहते हैं ?

पी ए — रिश्वत ।

नेता — बेवकूफ ! ब्रेकिट की बाते समझने और समझाने की होती हैं, बोलने की नहीं ।

पी ए — यस सर ।

नेता — अभी नया है ना, इसलिये सच बोल गया ! किन्तु जब भी हमसे कोई कुछ मागता है तो हम उसे देते अवश्य हैं । वो नहीं, जो वह चाहता है, बल्कि वो, जो हम चाहते हैं । *यानी भाषण* । पी ए इन्हे हमारा वह भाषण पढ़कर सुनाओ, जो हमको व्यापारियो के अखिल भारतीय सम्मेलन मे देना है । जिसमे हमने व्यापारियो से कुछ चाहा है ।

पी ए — यस सर ! छुआछूत एक भयकर बीमारी है । इसके कीटाणु बच्चे के पैदा होते ही फैलने शुरू हो जाते हैं ।

इसलिये हम चाहते हैं कि बच्चो के पैदा होने से पहले ही उनके छुआछूत का टीका लगा दिया जाये । व्यापारियो को इस बीमारी की रोकथाम के लिये ठोस कदम उठाने चाहिये।

(जमूरा ज़ोर से हँसता है ।)

नेता – हँसो मत !

जमूरा – क्यो ?

नेता – हँसने से हमारे भाषण की गम्भीरता खत्म हो जाती है !

जमूरा – तो मै रो लेता हूँ ।

नेता – शौक से । किन्तु हम पर या हमारे भाषण पर नही, अपने दुर्भाग्य पर ऑसू बहाना ।

जमूरा – सही कहते हैं आप । इससे बडा दुर्भाग्य हमारा और हो भी क्या सकता है ?

मदारी – मैं एक्सपोर्ट लाइसेन्स के लिये कह रहा था ।

नेता – पी ए !

पी ए – यस सर !

नेता – अब इन्हे वह भाषण सुनाओ, जिसमे हमने वैज्ञानिको से कुछ चाहा है ।

पी ए – हमारे देश मे साडा की अच्छी नस्ले हैं किन्तु फिर भी इस क्षेत्र मे अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है । हम चाहते हैं कि हमारे वैज्ञानिक बुरी नस्लो के साडो की ज़िम्मेदारी अपने कधो पर ले ताकि देश आत्मनिर्भर हो सके ।

(जमूरा रोता है ।)

नेता – अरे ! तुम तो रो रहे हो ।

जमूरा – हाँ ।

नेता – इसमे तुम्हारा कोई दोष नहीं है । हमारे भाषण होते ही बडे मार्मिक हैं ।

जमूरा – तुम्हारे भाषण पर नहीं, अपने दुर्भाग्य पर रो रहा हूँ ।

नेता – अगर तुम लोग इन छोटी-छोटी बातो पर इसी तरह रोते रहे तो हमको रोने-चिल्लाने पर भी राशन करना पड़ेगा । खैर, बोलो, क्या चाहिये तुम्हे ?

जमूरा – मुझे भूख लगी है ।

पी ए – यह बडा काइयाँ है सर ।

नेता – कैसे ?

पी ए – इसने इस गूढ रहस्य को जान लिया है कि जब तक बच्चा रोता नहीं, माँ भी उसे दूध नहीं पिलाती । इसलिये इसने पहले से ही रोना शुरू कर दिया है ।

नेता – तो क्या इसे दूध चाहिये ?

पी ए – यस सर ।

(नेता जमूरे के पास जाता है)

नेता – ए ऽ ऽ ऽ । तुम्हे दूध चाहिये ?

(जमूरा रोता रहता है)

नेता – रोओ नहीं—हम तुम्हारे लिये इस देश मे दूध-दही की नदियाँ बहा देगे । बोलो, और क्या चाहते हो ?

जमूरा – मुझे भूख लगी है ।

नेता – तो हमसे क्या चाहते हो ?

जमूरा – रोटी ।

नेता – भई, तुम लोगो मे मागने की यह आदत बुरी है ।

पी ए – सर, भाषण के दो-चार टुकड़े फैंक दीजिये । अपने आप चुप हो जायेगा ।

नेता – नहीं । भाषण के टुकड़ो के साथ इसे थोड़ा आश्वासनो का आचार भी चाहिये ।

जमूरा – मैं भूखा हूँ ।

(नेता भाषण देता है)

नेता – हमारे देश मे पिछले साल की भाँति इस बार भी फसल बहुत अच्छी हुई है । समय पर बारिश होने से ही यह सम्भव हुआ है । हमारे नदी तालाब पानी से भर गये हैं। खेत अनाज की बालियो से लदे झूम रहे हैं । अब कोई भूखा नहीं रहेगा । फिर भी

[पीछे लाइन मे खड़े व्यक्तियो मे से एक व्यक्ति अखबार बेचने वाले का अभिनय करता है और मच पर चक्कर काटता है।]

अखबार वाला — भूख से तग आकर माँ ने बच्चो को कुएँ मे ढकेला । स्वय द्वारा भी आत्म-हत्या । भूख ने मासूमो की जान ली । आज की ताज़ा खबर, आज की ताज़ा खबर ।

जमूरा — मैं भी भूखा हूँ ।

नेता — तुम्हे रोटी चाहिये ?

जमूरा — हाँ ।

नेता — तो फिर जैसा मैं कहता हूँ वैसा कहो ।

जमूरा — अच्छा ।

(नेता जमूरे की आँखो मे झाँक कर हिप्नोटाइज़ करने का अभिनय करता है ।)

नेता — बोलो—मैं भूखा नहीं हूँ ।

जमूरा — मैं भूखा नहीं हूँ ।

नेता — मैं उपवास कर रहा हूँ ।

जमूरा — मैं उपवास कर रहा हूँ ।

नेता — ताकि अन्न की बचत हो ।

जमूरा — ताकि अन्न की बचत हो ।

नेता — मैं आत्म-शुद्धि कर रहा हूँ ।

जमूरा — मैं आत्म-शुद्धि कर रहा हूँ ।

नेता — और आत्म-शुद्धि के लिये

जमूरा — और आत्म-शुद्धि के लिये

नेता — शरीर को कष्ट देना आवश्यक है ।

जमूरा — शरीर को कष्ट देना आवश्यक है ।

नेता — बस, इसे रटते रहो । भूख अपने आप मिट जायेगी ।

(पी ए व नेता चले जाते हैं ।)

(जमूरा इन्हीं शब्दो को दोहराता है ।)

मदारी — क्या कर रहे हो जमूरे ?

जमूरा — मैं उपवास कर रहा हूँ ।

मदारी — क्यो ?

जमूरा — ताकि अन्न की बचत हो ।

मदारी — तुम सन्यासी कब से हो गये ?

जमूरा — मैं आत्म-शुद्धि कर रहा हूँ ।

मदारी — लगता है, अभी तक तुम जागे नहीं हो । तुम्हे जगाना पड़ेगा । जमूरे । जमूरे ।।
[जमूरे को झकझोरता है।]

जमूरा — हैं ?

मदारी — क्या हुआ ?

जमूरा — ओह ! ख़्वाब देख रहा था मदारी ।

मदारी — क्या देखा ?

जमूरा — अनाज ही अनाज रोटियाँ ही रोटियाँ ।

मदारी — पेट भरा ?

जमूरा — हाँ, खूब जमकर खाया है ।

मदारी — क्या ?

जमूरा — देसी घी मे तले हुये भाषण के टुकड़े और सरसो के तेल से बना आश्वासनो का आचार ।

मदारी — मिलावट तो नहीं थी ?

जमूरा — घी ओर तेल मे थी । भाषण और आश्वासनो मे नहीं ।

मदारी — खैर, छोडो अब ये बाते । धन्धे की बात करो ।

जमूरा — करो ।

मदारी — तुम्हे पता है, पहली प्रोडक्ट मे हमको नुकसान हुआ है । इस माल की कहीं कोई डिमान्ड नहीं ।

जमूरा — पता है ।

मदारी — फिर इस नुकसान को कैसे पूरा किया जाये ?

जमूरा — बाई–प्रोडक्ट बनाकर ।

मदारी — नहीं, हम कोई बाई–प्रोडक्ट नहीं बनायेगे ।

जमूरा — फिर ?

मदारी — हम फ़ार्मूला बदल देगे । इस बार हम ईमानदार इन्सान ज़रूर बनायेगे ।

जमूरा — अच्छा, तो चलो ।

(प्रकाश लुप्त होता है । फिर मच के बीच मे कुछ लोग उसी तरह मशीन की आवाज़ निकालते हैं और इसी आवाज़ के बीच स्वर उभरते है "आरोप लगाओ – शोर मचाओ – लागो को बहरा बनाओ प्रगति के सूरज पर पहरा बिठाओ", आदि । धीरे-धीरे प्रकाश तेज़ होता

है। लोग उसी तरह बैठते हैं और उनके घेरे के बीच मे क्रोधित मुद्रा मे एक व्यक्ति उभरता है ।)

मदारी – लगता है, अब काम बन गया है ।

जमूरा – नहीं मदारी । इस बार विरोधीराम बन गया है ।

मदारी – यह कैसा है ?

जमूरा – यह भी उन जैसा है ।

मदारी – नाम ?

जमूरा – प्रगति का निरोध

मदारी – काम ?

जमूरा – विरोध ही विरोध ।

मदारी – क्या यह भी ईमानदार नहीं ?

जमूरा – स्वय के प्रति भी नहीं ।

मदारी – ऐसा मत कहो जमूरे, मेरा जी जलता है ।

जमूरा – यह वह गिरगिट है जो हर वक्त रग बदलता है ।

मदारी – और क्या करता है ?

जमूरा – प्रगति के सूरज पर पहरा बिठाता है ।

मदारी – और ?

जमूरा – अन्धकार ही अधकार दिखाता है ।

मदारी – और ?

जमूरा – कभी-कभी नौजवानो को गुमराह भी करता है ।

मदारी – नहीं—ऐसा नहीं हो सकता । लगता है, तुम मुझे गुमराह कर रहे हो ।

जमूरा – चलो, तुम खुद चलकर देख लो ।

मदारी – ठीक है चलो ।

जमूरा – मगर एक बात का ध्यान रखना ।

मदारी – वह क्या ?

जमूरा – अपना दिमाग और आँखे खुली रखना ।

मदारी – क्यो ?

जमूरा – कहीं उसकी दलीलो से तुम्हारा दिमाग न बदल जाए ।

मदारी – नहीं, मैं उसका निर्माता हूँ । मुझ पर असर नहीं होगा । चलो ।

(मदारी आगे बढ़ता है । जमूरा फिर रोकता है ।)

जमूरा — सुनो मदारी ।

मदारी — अब क्या है ? क्यो मुझे छेडा है ?

जमूरा — इसलिये कि आदमी यह टेढ़ा है ।

मदारी — तो ?

जमूरा — इसे समझने के लिये पहले दूर से ही देखना होगा

मदारी — ठीक है । तुम कहते हो तो दूर से ही देखते हैं । चलो ।

(प्रकाश दाहिनी तरफ केन्द्रित होता है । वहाँ एक स्टूल रक्खा है । विरोधीराम घेरे से निकल कर स्टूल पर खड़ा होता है । घेरे के लोग उसके सामने श्रोता बनकर खडे हो जाते है । जमूरा दूर रहता है और मदारी भीड़ के पीछे खड़ा रहता है ।)

विरोधीराम — हाँ तो मैं कह रहा था कि सरकार ने क्या किया ? बहुत कुछ किया है सरकार ने । स्कूल और कॉलेज खोलकर युवको को बेरोज़गार बना दिया ।

सभी श्रोता — हाँ सा ।

विरोधीराम — रेल की लाइने बिछाकर हमारे खेतो को रौंद डाला ।

सभी श्रोता — हाँ–सा ।

विरोधीराम — बिजली की चकाचौंध से हमारी आँखो को कमज़ोर कर दिया।

सभी श्रोता — हाँ–सा ।

विरोधीराम — जगह-जगह अस्पताल खोलकर हमको मरीज़ बना दिया।

सभी श्रोता — हाँ–सा ।

विरोधीराम — किन्तु हम अब यह बर्दाश्त नहीं करेगे । हम मरीज़ नहीं बनेगे। हम बिजली की चकाचौंध के बावजूद अपनी आँखे खुली रक्खेगे और स्कूल कॉलेजो मे अपने बच्चो को भेजकर उन्हे बेरोज़गार नहीं बनाएगे, नही बनाएगे नहीं बनाएगे ।

(सभी श्रोता तालियाँ बजाते है ।)

विरोधीराम — धन्यवाद । मैं विरोधीराम वल्द आलोचक नाथ पुण्डरीक सत्यनिष्ठ कर्मयोगी आपका सेवक आपको बताना चाहता हूँ कि हमारे खेतो मे चूहे किसने छोडे ? नालियो मे कीडो को

किसने आने दिया । हवा और बादलो को किसने रोका ? बता दूँ ?

सभी श्रोता — हाँ—सा ।

विरोधीराम — सरकार ने । आप लोग इस समय पसीने से लथपथ खडे हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आप लोगो की सुख सुविधा के लिये मैं बादलो का एक समूह और शीतल हवा लेकर चला था । किन्तु सरकार के सिपाहियो ने बादलो के उस समूह को चौराहे से आगे नहीं बढ़ने दिया और उस मैदान मे हवा पर पहरा बिठा दिया । मेरे मतदाताओ, मैं तो आप सभी को ठडा करना चाहता हूँ किन्तु सरकार करने ही नहीं देती ।

(सभी श्रोता तालियाँ बजाते है ।)

विरोधीराम — धन्यवाद । मैं विरोधीराम वल्द आलोचक नाथ पुण्डरीक सत्यनिष्ठ कर्मयोगी आपका सेवक आपको बताना चाहता हूँ कि आपके मोहल्लो मे मच्छर आपको क्यो परेशान करते हैं और आपकी चारपाइयो मे गैरकानूनी अतिक्रमण से बसे खटमल आपका खून क्यो चूसते हैं ? बता दूँ ?

सभी श्रोता — हाँ सा ।

विरोधीराम — यह सब सरकार की मेहरबानी है । एक गुप्त समझौता हुआ है सरकार का मच्छरो और खटमलो से । उस समझौते की पहली शर्त यही है कि मच्छर आपके मोहल्लो मे घुसकर आप पर आक्रमण करे और खटमल आपका खून चूसे । आप अपनी चारपाइयो को गौर से देखियेगा आप लोग पायेगे कि जो खटमल आपका खून चूस रहे हैं वे देशी नहीं विदेशी हैं । विदेशी खटमलो का आयात किया है सरकार ने और इसमे करोडो रुपयो का कमीशन खाया है ।

(सभी श्रोता तालियाँ बजाते हैं ।)

विरोधीराम — मेरे मतदाताओ। यह तालियाँ बजाने की बात नहीं है। शर्म की बात है । सब मिलकर बोलिये शेम–शेम ।

सभी श्रोता — हाँ—सा । शेम-शेम-शेम ।

विरोधीराम — और अब मैं आपको बता दूँ कि ऐसा क्यो किया गया ?

सभी श्रोता — हाँ—सा ।

विरोधीराम — ऐसा इसलिये किया गया, ताकि आप हमारी सही दलीले ना सुन सके । आप ही सोचिये, यदि मच्छर आपके कानो के पास भिनभिनाते रहेगे तो क्या आप हमारी बाते सुन सकेंगे?

सभी श्रोता — ना—सा !

विरोधीराम — और विदेशी खटमलो का आयात कमीशन खाकर इसलिये किया गया ताकि वे आपका खून चूसते रहे, आप अपना बदन खुजाते रहे और आपका ध्यान सरकार के भ्रष्टाचार की ओर न जाये । आप शरीर से कमज़ोर हो जाये और क्रान्ति न कर पाये ।

(सभी श्रोता हँसते हैं ।)

विरोधीराम — मेरे मतदाताओ, अभी कुछ ही देर पहले आपने गलत बात पर तालियाँ बजायी थीं और अब गलत बात पर हँस रहे हैं। यह बात हँसने की नहीं, नारे लगाने की है। मेरे साथ आप नारे लगाये । मैं बोलूँगा—खटमलो का आयात, आप बोलेगे—नहीं होगा—नहीं होगा । मैं बोलूँगा—मच्छरो से गुप्त समझौता, आप बोलेगे—नहीं होगा—नहीं होगा । तो शुरू करूँ?

सभी श्रोता — हाँ—सा !

विरोधीराम — खटमलो का आयात——

सभी श्रोता — नहीं होगा — नहीं होगा ।

विरोधीराम — मच्छरो से गुप्त समझौता ——

सभी श्रोता — नहीं होगा——नहीं होगा ।

विरोधीराम — धन्यवाद । मैं विरोधीराम वल्द आलोचक नाथ पुण्डरीक सत्यनिष्ठ कर्मयोगी आपका सेवक अब आपको सरकार का एक और घृणित काम बताता हूँ । बता दूँ ?

सभी श्रोता — हाँ—सा ।

विरोधीराम — आज सरकार कह रही है कि महगाई इसलिये बढ़ रही है, क्योकि आबादी बढ़ गयी है । लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह आबादी किसने बढ़ायी ? आपके घरो मे बच्चो की लाइन किसने लगायी ? कौन है इसके पीछे ? बता दूँ ?

सभी श्रोता — हाँ—सा !

विरोधीराम — सरकार ! सरकार ने लगायी है आपके घरो मे बच्चो की लाइन ! इसके लिये आप स्वय को भले ही जिम्मेदार मानते हो, लेकिन मैं फिर कहता हूँ कि इसके जिम्मेदार आप नहीं, सरकार है ।

मदारी — बन्द करो अपनी यह बकवास ! बहुत हो गया ।
(सवाद बोलते हुये मदारी विरोधीराम के पास जाता है।)

विरोधीराम — आपकी तारीफ ?

मदारी — मैं तुम्हारा निर्माता हूँ ।

विरोधीराम — निर्माता ? मेरा कोई निर्माता नहीं है । मैं तो जगली घास की तरह पैदा हुआ हूँ और जगली फूल की तरह पनप रहा हूँ ।

मदारी — यह तुम्हारा भ्रम है । ससार की प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई निर्माता अवश्य होता है ।

विरोधीराम — चलो, माने लेता हूँ कि तुम मेरे निर्माता हो । मगर सरकारी एजेन्ट की तरह अकड़ क्यो रहे हो ? क्या चाहते हो ?

मदारी — मैं यह कहना चाहता हूँ कि तुम लोगो को गुमराह क्यो कर रहे हो ?

विरोधीराम — मैं किसे गुमराह कर रहा हूँ ? लोग मुझे सुनना चाहते हैं और मैं सत्य बोल रहा हूँ ।

मदारी — तुम झूठ बोल रहे हो ।

विरोधीराम — क्यो भाइयो ? क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ ?

सभी श्रोता — ना सा !

विरोधीराम — लो सुन लो । क्या कह रहे हैं यह लोग ?

मदारी — अरे, यह तो अन्धे, गूँगे और बहरे हैं । इनका सत्य वही है जो तुम्हारे जैसे चतुर लोगो का झूठ है ।

विरोधीराम — बकवास बन्द करो अगर तुम यह साबित कर दो कि मैं झूठ बोल रहा हूँ तो मैं अपने मतदाताओ के सामने शपथ लेता हूँ कि मैं कोई पद ग्रहण नहीं करूँगा और सत्ता से दूर रहूँगा ।

मदारी — तुम क्या कह रहे थे अभी, कि आबादी सरकार ने बढ़ायी है ?

विरोधीराम — हाँ, मैं साबित कर सकता हूँ कि आबादी सरकार ने बढ़ायी है। मेरे मतदाताओ, साबित कर दूँ ?

सभी श्रोता — हाँ सा !

विरोधीराम — तो सुनो ! प्रजातन्त्र मे सरकार किसकी होती है ? जनता की। जो आज जनता है, वही कल सरकार है। जो आज सरकार है, वही कल जनता होगी। मतलब जनता ही सरकार है और सरकार ही जनता है। मैंने कहा है कि आबादी सरकार ने बढ़ायी है तो क्या ग़लत कहा है ? क्या सरकार जनता नहीं है ? बोलो ?

मदारी — तुम्हारे समीकरण मेरी समझ मे नहीं आ रहे हैं।

विरोधीराम — तो फिर क्या आ रहा है तुम्हारी समझ मे ?

मदारी — यही कि तुम बहुत चालाक हो। तुम्हारा हर समीकरण तुम्हारा स्वार्थ है। भाइयो, मैं आप लोगो से कहना चाहता हूँ

विरोधीराम — क्या कहना चाहते हो ?

मदारी — सत्य कहना चाहता हूँ।

विरोधीराम — यह मैं तुम्हे कहने नहीं दूँगा। भाइयो, यह आदमी सरकारी एजेन्ट है। सरकार ने इसे हमारी सभा मे गड़बडी करने के लिये भेजा है। इस सरकारी एजन्ट को यहाँ से भगा दीजिये।

सभी श्रोता — हाँ सा ! मारो—– मारो—– !

मदारी — मेरी बात सुनिये—– मैं—– मैं—–

(लोग मदारी की तरफ बढ़ते हैं। मदारी भागता है। लोग "मारो मारो" कहते हुये मदारी के पीछे भागते हैं। स्टेज का पूरा चक्कर लगाने के बाद मदारी भागता हुआ जमूरे के पास आता है और लोग पीछे जाकर फिर लाइन मे खड़े हो जाते हैं।)

मदारी — जमूरे जमूरे।

जमूरा — क्या हुआ मदारी ? अरे, इतने हाँफ क्यो रहे हो ? क्या हुआ?

मदारी — कुछ नहीं । तुम तुम सही कहते थे । यह तो एक खतरनाक इन्सान है ।

जमूरा — इसीलिये तो तुम्हे दूर से देखने-सुनने के लिये कहा था । लगता है, थक गये हो ।

मदारी — नहीं । अब थकने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता । इन लोगो के लिये जवाब भी तो तैयार करना है । चलो जमूरे, हम फिर कोशिश करगे । इस बार एक सच्चा और ईमानदार इन्सान हम जरूर बनाएगे । चलो ।

(मदारी और जमूरा मच के बीच आते हैं । लोग घेरा बनाते हैं । प्रकाश यहीं केन्द्रित हो जाता है । मदारी और जमूरा मशीन चलाने का अभिनय करते हैं । लोग घूमना आरम्भ करते हैं । चक्कर काटते हुए लोग बोलते रहते हैं—''कम्पीटीशन कम्पीटीशन । कमीशन कमीशन, सलैक्शन सलैक्शन'' सभी लोग फिर मशीन की ध्वनि मुँह से निकालते हैं और धीरे धीरे बैठना शुरू करते हैं और बीच से एक ऑफीसर उठना आरम्भ करता है और अन्त मे सब व्यक्ति बैठ जाते हैं और ऑफीसर पूरे रूप मे खडा हो जाता है ।)

मदारी — ये है हमारी तीसरी प्रोडक्ट ।

(जमूरा गौर से ऑफीसर को देखता है ।)

मदारी — इस बार हम जरूर कामयाम हुए हैं ।

जमूरा — नहीं मदारी । फार्मूला फिर गलत हो गया ।

मदारी — क्यो ? क्या यह भी ईमानदार इन्सान नहीं है ?

जमूरा — ईमानदारी से इसका दूर का भी रिश्ता नहीं है ।

मदारी — इस बार क्या बन गया ?

जमूरा — ईमानदार इन्सान की जगह भ्रष्ट ऑफीसर ।

मदारी — क्या हमारे देश मे इसकी कमी है ?

जमूरा — नही यह तो हर शाख पर बैठा है ।

मदारी — क्या ये दोनो प्रोडक्ट्स से भी ज्यादा खतरनाक है ?

जमूरा — बहुत ज्यादा ।

मदारी — तीनो मे अन्तर ?

जमूरा — वे बोलते ज्यादा है—ये लिखता ज्यादा है ।

मदारी — और ?

जमूरा — उनका जीवन पाँच साल है, इसका अठावन साल ।

मदारी — ट्रेनिंग के लिये इसे विदेश भेज दे तो ?

जमूरा — फिर यह लौटकर नहीं आयेगा । नुक़सान ज्यादा होगा ।

मदारी — फिर क्या करे ?

जमूरा — इसे समय से पहले रिटायर कर दो ।

मदारी — लेकिन पहले देखे तो, शायद ईमानदार हो ।

जमूरा — हाँ—हाँ, देख आओ । मैं यहीं बैठा हूँ ।

(मदारी आगे बढ़ता है । ऑफीसर और दो व्यक्ति घेरे से निकल कर मच के बायीं ओर आगे आते हैं, वहाँ दो कुर्सियाँ और एक स्टूल रक्खा है । ऑफीसर थोड़ा आगे कोने पर बैठ कर शराब पीने का अभिनय करता है । पहले एक व्यक्ति फिर चपरासी बैठता है । मदारी ज्योंही चपरासी के पास आगे बढ़ता है, त्योंही)

चपरासी — ए ! कहाँ घुसा जा रहा है ?

मदारी — मुझे साब से मिलना है ।

चपरासी — पहले हमको प्रणाम कर ।

मदारी — प्रणाम ।

चपरासी — हूँ । क्या काम है ?

मदारी — जी एक दरख़्वास्त देनी है ।

चपरासी — जेब मे क्या है ?

मदारी — कुछ नहीं ।

चपरासी — कुछ नहीं ? अबे खाली जेब साब से मिलने चला है ?

मदारी — हाँ—हाँ, याद आया— एक बीडी है ।

चपरासी — साब बीड़ी नहीं पीता ।

मदारी — तो क्या पीता है ?

चपरासी — अंग्रेज़ी शराब अंग्रेज़ी सिगरेट ।

मदारी — वो तो नहीं है । मगर साब बात तो करेगा न ?

चपरासी — करेगा । वो भी अंग्रेज़ी मे ।

मदारी — अंग्रेज़ी शराब अंग्रेज़ी सिगरेट अंग्रेज़ी बात ? यह हर जगह अंग्रेज़ी क्यो ?

चपरासी — क्योंकि साब का बाप एक अंग्रेज़ था ।

मदारी — ओह !

चपरासी — अरे, तुझे मुफ्त मे ही दफ्तर का सारा राज़ बता दिया। हाँ तो, क्या है तेरी जेब मे ?

मदारी — बताया न । बीड़ी ।

चपरासी — चल बीड़ी ही निकाल और जा अन्दर ।

(मदारी बीड़ी देता है और चला जाता है ।)

चपरासी — साले चले आते हैं खाली जेब । आज तो कम्बख्त ने बोणी ही ख़राब कर दी ।

(मदारी आगे बढ़ता है । क्लर्क कुर्सी पर बैठा सो रहा है । क्लर्क की गर्दन कभी गिरती है कभी उठती है । मदारी ताली बजाकर उसे जगाता है ।)

क्लर्क — (चौंककर) यस सर ! हैं ? अबे कौन है तू ? धत्तेरे की। अबे तुझे इसी समय आना था ? हाय-हाय कितना प्यारा सपना देख रहा था मैं ।

मदारी — तुम सपना देख रहे थे ?

क्लर्क — अबे तो इस कुर्सी पर बैठकर और क्या देख सकते हैं ?

मदारी — बहुत सुन्दर सपना था ?

क्लर्क — बहुत सुन्दर ।

मदारी — क्या देखा ?

क्लर्क — मैंने देखा, मैं साब की कुर्सी पर बैठा हूँ और साब मेरी कुर्सी पर बैठा है । मैंने बटन दबाया । साब दौड़ता हुआ मेरे पास आया । मैंने एक फाइल मँगवायी । वह दौड़कर फाइल ले आया । मैंने सिर्फ फाइल कवर देखा और साब को एक मोटी सी गाली दी और फाइल फेंककर उनके मुँह पर दे मारी । साब ने गरदन झुकाली । मैंने गेटआउट कहा । साब सर झुकाकर आँसू बहाते हुए बाहर निकल गया । फिर मैंने चपरासी को बुला कर अपनी स्टेनो मिस रोज़ी को बुलाने को कहा और यह भी कहा कि रोज़ी के कमरे मे आने के बाद किसी को भी अन्दर न आने दिया जाये ।

मदारी — हूँ । फिर रोज़ी आयी ?

क्लर्क — नहीं। रोज़ी की जगह तुम आ गये। मैं पूछता हूँ तुम दस मिनट बाद नहीं आ सकते थे ?

मदारी — जी मुझे पता नहीं था कि आप ख्वाब देख रहे हैं।

क्लर्क — अबे मैं ही क्या मेरा जैसा हर व्यक्ति ऐसा ही ख़्वाब देखता है। खैर, बोल क्या काम है ?

मदारी — मुझे साब से मिलना है।

क्लर्क — क्यो ?

मदारी — एक दरख्वास्त देनी है।

क्लर्क — वज़न साथ लाये हो ?

मदारी — क्या मतलब ?

क्लर्क — बगैर वज़न के तुम्हारा कागज़ कहीं उड जायेगा।

मदारी — तो फिर इसके साथ एक पत्थर का टुकडा और दे देता हूँ।

क्लर्क — हाँ कोई भी प्रीसियस स्टोन चलेगा।

मदारी — जी ?

क्लर्क — हीरा–पन्ना–नीलम कुछ भी।

मदारी — इतने हल्के से कागज़ पर इतना भारी वज़न ?

क्लर्क — कागज जितना ज्यादा हल्का होता है वज़न उतना ही भारी रखा जाता है।

मदारी — एक बात पूछूँ ?

क्लर्क — पूछो।

मदारी — ये सारा वज़न तुम्हीं रख लेते हो ?

क्लर्क — नहीं भाई। अपने को तो सिर्फ टेन-परसेन्ट भार मिलता है।

मदारी — बाकी ?

क्लर्क — साब उठा लेता है।

मदारी — फिर ये काम तुम क्यो करते हो ?

क्लर्क — नहीं करूँ तो साब मेरी सी आर खराब करके दूसरे ही दिन मेरा ट्रॉंसफर ऐसी जगह कर देगा–जहाँ पीने को पानी भी नहीं मिलेगा। समझा ?

मदारी — ओह ! इतना आतक ?

क्लर्क — यह तो बता, तु एन्टीकरप्शन का आदमी तो नहीं है ?

मदारी — नहीं।

क्लर्क — तो कौन है ?

मदारी — मैं तुम्हारे साब का निर्माता हूँ ।

क्लर्क — हैं ? निर्माता ? काहे को झूठ बोलता है यार । साब के बाप को गुज़रे तो तीस साल हो चुके हैं ।

मदारी — मैं सच कहता हूँ ।

क्लर्क — अच्छा बाबा, मान लेता हूँ । यह कलयुग है । हो सकता है, दो नम्बर के पैसे की तरह आजकल दो नम्बर के बाप भी चलते हो । आप बैठिए, मैं अभी साब को बोलता हूँ ।

(क्लर्क थोड़ा आगे बढ़कर पर्दा हटाने का अभिनय करता है।)

क्लर्क — मे आई कम इन सर ?

अफसर — (गुस्से मे) वाट डू यू वाट ?

क्लर्क — सर सम बॉडी वान्टस टू सी यू ।

अफसर — अपाइन्टमेन्ट लिया है उसने ?

क्लर्क — नहीं साब ।

अफसर — कोन है ?

क्लर्क — अपने आपको आपका निर्माता बताता है ।

अफसर — मेरा निर्माता ? यू मीन सलैक्शन कमेटी का मैम्बर आया है? फौरन भेजो उसे अन्दर ।

क्लर्क — यस सर ।

(क्लर्क मदारी को भेजता है । अफसर मदारी को हैरानी से देखता है, फिर गुस्सा होता है ।)

अफसर — यू हू आर यू ?

मदारी — हिन्दी मे बात कीजिए ।

अफसर — कौन हो तुम ?

मदारी — तुम्हारा निर्माता ।

अफसर — तुम सलैक्शन कमेटी का आदमी है ?

मदारी — नही ।

अफसर — फिर हमारा निर्माता कैसे हो सकता है । केसे अन्दर आया ?

मदारी — आपने अन्दर बुलाया ।

अफसर — ओह । क्या मागता है ?

मदारी — मागने नहीं, देने आया हूँ ।

अफसर — क्या ?

मदारी — यह दरख़्वास्त ।

अफसर — पेपरवेट रखा ?

मदारी — ज़रूरी है ?

अफसर — हाँ ।

मदारी — अगर नहीं रखूँ तो ?

अफसर — दरख़्वास्त की उम्र बढ़ जाएगी ।

मदारी — कितनी ?

अफसर — तुम्हारी उम्र से भी ज्यादा ।

मदारी — ऐसा अब आगे नहीं चलेगा । तुम्हे जवाब देना होगा ।

अफसर — जवाब ? किसे ?

मदारी — सच्चे और ईमानदार इन्सान को ।

अफसर — कहा है वो ?

मदारी — वह आने ही वाला है ।

अफसर — यू रबिश गैट-आऊट फ्राम हियर ।

मदारी — तुम्हे जवाब देना होगा वह आने ही वाला है ।

(कहता हुआ मदारी जमूरे के पास आता है ।)

जमूरा — क्या हुआ ?

मदारी — तुम ठीक कहते थे । यह भी बहुत खतरनाक इन्सान है। चलो जमूरे हम फिर कोशिश करेगे । इस बार ईमानदार इन्सान जरूर बनाएगे ।

जमूरा — चलो । एक बार और देख लो ।

(दोनो मच के बीच की ओर बढ़ते हैं । लोग फिर घेरा बनाकर घूमते है । कुछ मशीन की आवाज़ निकालते हैं। कुछ बोलते हे—"भ्रष्ट बनाओ लूट मचाओ दाम बढ़ाओ ।' ये शब्द मशीन की आवाज़ मे डूब जाते हैं घूमते हुए लोग धीरे-धीरे बैठते है और बीच मे सूट पहने एक व्यक्ति उभरता है ।)

मदारी — इस बार हमने खूब मेहनत की है । ये ईमानदार इन्सान ज़रूर होना चाहिए ।

जमूरा — मेहनत फिर बेकार गई मदारी ।
मदारी — क्यो ? ये भी ईमानदार इन्सान नहीं ?
जमूरा — नहीं ।
मदारी — इस बार क्या बन गया ?
जमूरा — बेईमानो का बादशाह ।
मदारी — नाम ?
जमूरा — भ्रष्ट व्यापारी ।
मदारी — काम ?
जमूरा — मिलावट और टैक्सो की चोरी ।
मदारी — दाम ?
जमूरा — दो नम्बर का ।
मदारी — धाम ?
जमूरा — शहर का हर चौराहा ।
मदारी — क्या यह उन सभी से ज्यादा भ्रष्ट है ?
जमूरा — यह उनका गुरु है । सबको भ्रष्ट बनाता है ।
मदारी — ऐसे इन्सान का मुँह काला करके उसे बाज़ार मे घुमाना चाहिये ।
जमूरा — कोई फर्क नहीं पडेगा मदारी । ये तो खुद बाज़ार को काला करता है ।
मदारी — तब तो यह इन्सान बडा खोटा है ।
जमूरा — हाँ चेहरे पर इसके मुखौटा है ।
मदारी — फिर इसका क्या करे ?
जमूरा — सम्भाल कर रख लो ।
मदारी — क्या इसकी भी डिमाण्ड होती है ?
जमूरा — हाँ ।
मदारी — कब ?
जमूरा — राजनैतिक सौदा होता है तब ।
मदारी — ऐसा क्या है इसका बूता ।
जमूरा — चाँदी का जूता ।
मदारी — हम भी तो नगे पाँव हैं ।
जमूरा — हमको यह कुछ नहीं देने का ।
मदारी — क्यो ? आखिर हम इसके निर्माता हैं ।

जमूरा — खटमल से खून वापस लेने की उम्मीद रखते हो ?

मदारी — तुम यूँ ही बकते हो ।

जमूरा — तो जाओ एक बार फिर क़िस्मत आजमाओ ।

मदारी — जाता हूँ, और कुछ लेकर ही लौटूंगा ।

(मदारी आगे बढ़ जाता है । व्यापारी घेरे के बीच से निकल कर दाहिनी आर जाता है । दो व्यक्ति उसके दोनो ओर खड़े हो जाते हैं । मदारी आता है और इनको गौर स देखता है।)

व्यापारी — पार्टनर्स ।

दोनों व्यक्ति — यस ब्रदर ।

व्यापारी — कल हमने कितने बढ़ाये थे ?

दोनों व्यक्ति — (हाथ से इशारा करके) इतने ।

व्यापारी — तो आइये, थोड़े और बढ़ा दें ।

दोनों व्यक्ति — यस ब्रदर ।

(तीनो हाथ मिलाकर किसी चीज़ को ऊँचा चढ़ाने जैसा अभिनय करते हैं ।)

व्यापारी — बस--अभी इतने ही रहने दो ।

मदारी — आप लोग अभी क्या चढ़ा रहे थे ?

व्यापारी — चीज़ो के दाम ।

मदारी — हैं ? इतनी आसानी से चढ़ा दिये--बगैर किसी तकलीफ़ के?

व्यापारी — तकलीफ तो ग्राहक को होती है ।

मदारी — तुम्हे कोई तकलीफ नहीं होती ?

व्यापारी — होती है ।

मदारी — कब ?

व्यापारी — जब ये चढ़े हुए भाव गिरते हैं तब । मगर तुम ये सब क्यो पूछ रहे हो ? कौन हो तुम ?

मदारी — मुझे नहीं पहचानते   मैं तुम्हारा निर्माता हूँ ।

व्यापारी — निर्माता ?

(व्यापारी के साथ वाले व्यक्ति उसको पगड़ी और चश्मा देते हैं । वह चश्मा और पगड़ी पहन कर अब अपने बोलने का लहजा बदल कर सेठ का अभिनय करने लगता है ।)

व्यापारी — क्या बताया ?

मदारी — तुम्हारा निर्माता ।

व्यापारी — ओ भैया, अपनी तो एक ही माता थी । जिसका स्वर्गवास हो चुका है । फिर तुम कौन-सी माता हो ?

मदारी — निर्माता का अर्थ है, तुम्हे बनाने वाला ।

व्यापारी — हर आदमी आज एक दूसरे को बना ही तो रहा है । तुम हमको काजी बनाओ हम तुमको मुल्ला बनायेगे ।

मदारी — ओफ्फो ! मेरा मतलब है मैं तुम्हारा जन्मदाता हूँ ।

व्यापारी — हाँ । तो यू कहो कि भगवान् हो । भगवान्, आपके लिये तो मैंने हाल ही मे पचास हज़ार की लागत से मदिर बनवाया है । मूर्ती का ऑर्डर भी दे चुका हूँ लेकिन जब आप स्वय ही आ गये हैं तो अब आपकी ही स्थापना करूगा ।

मदारी — देखिये, आप मुझे गलत समझ रहे हैं ।

व्यापारी — गलत तो सभी अपने आपको समझ रहे हैं । जो भगवान् नहीं हैं, वे भी अपने को भगवान् समझ रहे हैं।

मदारी — देखिये, मैं भगवान नहीं इन्सान हूँ और आप से बात करने आया हूँ ।

व्यापारी — तो यूँ कहो न । बातो का धन्धा करते आये हो । हाँ कहो ।

मदारी — जी बात यह है कि

व्यापारी — ज़रा ठहरो । पहले यह बताओ कि अपनी बातो की एन्ट्री एक नम्बर के खाते मे होगी या दो नम्बर के खाते मे ?

मदारी — क्या मतलब ?

व्यापारी — अगर तुम बातो का टैक्स देने को तैयार हो, तो एन्ट्री एक नम्बर मे और अगर टैक्स नही दोगे तो दो नम्बर मे ।

मदारी — बातो पर टैक्स ? और फिर टैक्स नहीं देना तो चोरी है।

व्यापारी — हूँ ईमानदार आदमी लगते हो

मदारी — जी नहीं । ईमानदार आदमी बना रहा हूँ और इसीलिए आपके पास आया था कि

व्यापारी — समझ गया समझ गया

मदारी — तो फिर कुछ मदद कीजिये न ! ईमानदार इन्सान बन गये तो यह धरती स्वर्ग बन जायेगी ।

व्यापारी	—	जानता हूँ ऐसे बिजनेस प्रपोजल मेरे पास कई जन्मो से आ रहे है और मैंने कभी उनके लिये ना नहीं की
मदारी	—	इसका मतलब है कि आप अवश्य मदद करेगे ।
व्यापारी	—	अवश्यम्भावी । मैं इसका सारा खर्चा देने को तैयार हूँ ।
मदारी	—	जय हो आपकी ।
व्यापारी	—	मगर एक शर्त है और वो यह कि तुम जो कुछ भी बनाओगे उसके कम्पलीट राईट्स यानी पूरे अधिकार मेरे पास होगे ।
मदारी	—	क्या मतलब ?
व्यापारी	—	मतलब यह कि बगैर मेरी मर्ज़ी के तुम उसे बाहर नहीं निकालोगे ।
मदारी	—	लेकिन बाहर जाने से तो सभी का फायदा होगा ।
व्यापारी	—	तुम फायदे और नुकसान के बारे मे भी नहीं सोचोगे ।
मदारी	—	लेकिन तुम उसका क्या करोगे ?
व्यापारी	—	जो आज तक करता आया हूँ ।
मदारी	—	क्या ?
व्यापारी	—	तुम्हारे ईमानदार इन्सान मे थोडी-सी बेईमानी की मिलावट। जैसे शुद्ध दूध मे थोडे से दही का जामन् । फिर दूध, दूध नहीं रहेगा । मतलब ईमानदार इन्सान सिर्फ़ इन्सान रहेगा, ईमानदार नहीं ।
मदारी	—	तुम तुम बहुत खतरनाक आदमी हो तुम्हे जवाब देना होगा ।
व्यापारी	—	जवाब नहीं जामन् देना होगा ।
मदारी	—	हर बात का तुमसे हिसाब मागा जायेगा ।
व्यापारी	—	अपने खाते मे तो कोई एन्ट्री ही नहीं है ।
मदारी	—	वह सब वक्त बतायेगा । तुम जैसे खटमलो से खून की हर बूद का हिसाब मागा जायेगा ।
		(कहता हुआ मदारी जमूरे की ओर बढ़ता है । व्यापारी और दूसरे व्यक्ति हँसते हुये बाहर चले जाते हैं ।)
जमूरा	—	क्या हुआ मदारी ?
मदारी	—	तुम ठीक कहते थे । यह तो बहुत खतरनाक इन्सान है।

जमूरा — फिर ?

मदारी — फिर क्या ? हम हार मानने वाले नहीं । हम फिर कोशीश करेंगे । ईमानदार इन्सान ज़रूर बनायेंगे ।

जमूरा — वह नहीं बनेगा मदारी ।

मदारी — क्यों ?

जमूरा — क्योंकि हमारी मशीन का पुर्ज़ा-पुर्ज़ा ऐसे इन्सान बनाते-बनाते घिस चुका है ।

मदारी — तो हम हर पुर्ज़ा बदल देंगे ।

जमूरा — वह इतना आसान नहीं है ।

मदारी — जानता हूँ । लेकिन ऐसे लोगों को सबक देने के लिए उसे बदलना होगा । चलो मेरे साथ चलो

(मदारी जमूरे को घसीटता हुआ ले जाता है । प्रकाश लुप्त होता है । नगाड़ा बजता है और पुन हल्के प्रकाश मे अखबार बेचने वाला प्रवेश करता है।)

अखबार वाला — आज की ताज़ा खबर आज की ताज़ा खबर ईमानदार इन्सान का जल्दी ही आगमन स्वागत की तैयारियाँ ज़ोरो पर आज की ताज़ा खबर आज की ताज़ा खबर

(मच पर पूर्ण प्रकाश फैल जाता है । दोनो तरफ से नेता, विरोधीराम, ऑफीसर–चपरासी, क्लर्क–व्यापारी व अन्य सभी लोग मच पर आकर बिखर जाते हैं ।

अफसर — ईमानदार इन्सान ? नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

विरोधीराम — ऐसा कभी नहीं हो सकता ।

क्लर्क — हम नहीं होने देंगे ।

नेता — यह क्या मुसीबत आ गयी ? मेरे विदेश जाते ही ईमानदार इन्सान पैदा होने लगा ।

पी ए — अब क्या होगा ?

नेता — लोग जूते मारेंगे लेकिन सुनो इस बात की सच्चाई का पता लगाने के लिए एक कमीशन बिठा दो। और हाँ, हर ज़नाना अस्पताल के बाहर अपने जासूसों का जाल बिछा दो । जिस बच्चे पर शक हो उसे पैदा ही न होने दिया जाये । जाओ ।

पी ए — यस सर !

आफीसर — ए—इधर आओ

क्लर्क — यस सर !

ऑफीसर — देखो, सारी कॉन्फीडेन्शियल फ़ाइले जला दो और बयान जारी कर दो कि बिजली का तार शॉट हो जाने के कारण रेकॉर्ड रूम मे आग लग गई हरी अप !

क्लर्क — यस सर।

व्यापारी — गोदामो का सारा माल अन्डर-ग्राउण्ड कर दो ! सारा सोना और चाँदी गाडियो के बोनट और चेसिस मे भरकर गाड़ियो को वर्कशॉप मे खडी कर दो ! सारा कैश हमारे छोड़े हुए भिखारियो के झोलो मे भर दो ! दो नम्बर के खातो को किसी सरकारी दफ्तर के रेकॉर्ड-रूम मे रखवा दो ताकि वह अपने आप जल जाये जाओ

ऑफीसर — नॉनसेन्स ! हमारे आराम मे उसे दखल देने का क्या अधिकार है ?

नेता — हाँ–हाँ, कोई अधिकार नहीं ! देखो न, मैंने ज्योही अखबार मे पढ़ा कि ईमानदार इन्सान आने वाला है तो अपनी विदेश यात्रा बीच मे ही स्थगित कर दी और फौरन चला आया ! भला हमारे देश मे उसका क्या काम !

व्यापारी — मेरा तो विचार है कि हम सबको उसके खिलाफ एक होकर आवाज़ उठानी चाहिए ! इस अन्याय का मुकाबला करना चाहिये !

विरोधीराम — हाँ–हाँ, ज़रूर करना चाहिए ! अगर वह आ गया तो मैं चुनाव मे हार जाऊँगा !

व्यापारी — आखिर कानून हमको भी तो चैन से रहने की सुविधा देता है !

नेता — सही है ! तो आओ हम मिलकर मुक़ाबला करे ! यह तानाशाही ?

सब लोग — नहीं चलेगी !

व्यापारी — यह ग़द्दारी !

सब — नहीं चलेगी !

ऑफीसर — ईमानदार इन्सान----

सब — नहीं बनेगा नहीं बनेगा नहीं बनेगा !

नेता — ईमानदार आदमी----

सब — नहीं बनेगा---- नहीं बनेगा---- नहीं बनेगा !

(सब नारे लगाते हुए मच के दाहिनी ओर के कोने मे चले जाते हैं।)

(बायी ओर से जमूरा और मदारी का प्रवेश।)

मदारी — यह शोर कैसा है जमूरे ?

जमूरा — हमारी फैक्ट्री की प्रोडक्ट ने हडताल कर दी है।

मदारी — क्यो ?

जमूरा — क्योकि हम ईमानदार इन्सान बना रहे हैं।

मदारी — वह हम ज़रूर बनायेगे।

जमूरा — यही सोच कर हम अब तक अपने आपको धोखा देते आ रहे हैं।

मदारी — क्या मतलब ?

जमूरा — ईमानदार इन्सान नहीं बनेगा।

मदारी — क्यो ?

जमूरा — उसे बनाने का अधिकार उसको है जो स्वय ईमानदार हो। क्या तुम ईमानदार हो ? (पॉज) सच्चे और ईमानदार इन्सान बनाये नहीं जाते मदारी, वे पैदा होते हैं।

मदारी — माना कि मैं ईमानदार नहीं, लेकिन अगर यही सवाल मैं तुमसे करूँ कि क्या तुम ईमानदार हो ?

जमूरा — मैं नहीं जानता ? मैं केवल इतना जानता हूँ कि मैंवफादार ज़रूर हूँ।

मदारी — सबूत ?

जमूरा — अगर वफादार नहीं होता तो ये कुत्तो जैसी ज़िन्दगी नहीं जी रहा होता।

(तभी नारे लगाते हुए लोग मदारी और जमूरे का घेराव करते हैं।)

मदारी — ये ये ?

नेता — घेराव है।

मदारी — क्या चाहते हो ?

ऑफीसर — अपने अधिकारों की रक्षा ।

मदारी — क्या हैं तुम्हारे अधिकार ?

व्यापारी — भ्रष्टाचार का मुक्त-प्रसार ।

नेता — अपने ढग से जीने की सुविधा ।

मदारी — समझौते की शर्त ?

नेता — ईमानदार इन्सान न बनाने का इकरार ।

मदारी — अगर मैं कर दू इनकार ?

ऑफीसर — तो तुम्हारे सामने इस ढाँचे को जलाकर राख का एक ढेर बना दिया जायेगा और तुम्हारी लाश उसके नीचे दफन कर दी जायेगी ।

मदारी — (अट्टहास) तुमने बहुत देर कर दी ।

व्यापारी — क्यो ?

मदारी — मैं उसे पहले ही बना चुका हूँ ।

नेता — कहाँ है वह ?

मदारी — उसे खोजना तुम्हारा काम है ।

ऑफीसर — उसकी पहचान ?

मदारी — जैसे आसमान मे चाँद ।

विरोधीराम — पहेलियाँ मत बुझाओ ।

नेता — ठीक-ठीक बताओ ।

मदारी — मैं नहीं बताता ।

नेता — तुम्हे बताना पड़ेगा ।

मदारी — मुझे समय चाहिए ।

नेता — ठीक है । हम तुम्हे दस मिनिट का समय देते हैं । उसे बाहर भेज दो ।

ऑफीसर — नहीं भेजने की सज़ा तुम जानते ही हो ।

क्लर्क — तुम्हारी लाश पर

व्यापारी — इस पूरे ढाँचे की राख का ढेर ।

नेता — चलो साथियो । हम बाहर उसका इन्तज़ार करते हैं । हमारी एकता——

सब — जिन्दाबाद ।

(नारे लगाते हुए लोग दाहिनी ओर चले जाते हैं और लाइन बनाकर खड़े हो जाते हैं ।)

मदारी — अब क्या होगा ? मैंने इस ढाँचे को बचाने के लिए झूठ बोला था । कहा से लाऊ सच्चा और ईमानदार इन्सान? वे लोग इस पूरे ढाँचे को जला देगे ।

जमूरा — सब ठीक होगा मदारी । तुम सिर्फ एक काम करो ।

मदारी — क्या ?

जमूरा — मुझे मुक्त कर दो ।

मदारी — मतलब ?

जमूरा — मेरे पेट पर बाँधी रस्सी को खोल दो ।

मदारी — इससे क्या होगा ?

जमूरा — जिस ढाँचे को हम बचाना चाहते हैं, वह बच जायेगा ।

मदारी — लेकिन इस ढाँचे का तुम्हारी मुक्ति से क्या सम्बन्ध ?

जमूरा — सम्बन्ध है । हम एक ही धरातल पर खडे होकर एक ही दिशा मे सोचेगे । फिर खिचाव नहीं होगा भूख नहीं होगी वेदना नहीं होगी ।

मदारी — इसे बचाने के लिए मैं सब कुछ कर सकता हूँ । लो, मैं तुम्हे मुक्त करता हूँ ।

(मदारी जमूरे की रस्सी खोल देता है ।)

जमूरा — ओह । मुक्ति की साँस कितनी मादक होती है । यह आज जान पाया हूँ । अच्छा मदारी विदा लेकिन जाते-जाते एक बात और कहना चाहता हूँ । तुम रुकना नही ठहरना नही अपने प्रयत्न जारी रखना

मदारी — लेकिन तुम कहा चले ?

जमूरा — नाटक की इतिश्री करो ।

मदारी — क्या मतलब ?

जमूरा — जीवन एक नाटक है मदारी ।

मदारी — सुनो— सुनो— सुनो ।

(जमूरा आगे बढ़ जाता है । जहाँ लोग लाइन बनाकर खडे हैं ।)

जमूरा — क्या कर रहे हो ?

नेता — इन्तज़ार।

जमूरा — किसका ?

अफ़सर — सच्चे और ईमानदार इन्सान का।

जमूरा — किसलिए ?

व्यापारी — एक परम्परा का निर्वाह करने के लिए।

जमूरा — क्या है परम्परा ?

नेता — उसकी हत्या।

जमूरा — कैसे ?

ऑफीसर — मैं उसे ज़हर दूगा।

नेता — मैं उसे सूली पर चढ़ाऊगा।

व्यापारी — मैं उसे पत्थर मारूगा।

चपरासी — मैं उसे गोली मारूगा।

जमूरा — तो फिर आगे बढ़ो— मैं ही वह इन्सान हूँ जिसकी तुम्हे प्रतीक्षा है।

[सब लोग डरकर पीछे हटते हैं।]

जमूरा — डर क्यो रहे हो ? मैं निहत्था हूँ और तुम्हारे हाथो मे शस्त्र हैं—बढ़ो। आगे—— बढ़ो।

(कोई आगे नहीं बढ़ता सब पीछे रहते हैं। जमूरा मच के बीच आकर कहता है।)

जमूरा — मैं सच्चे और ईमानदार इन्सान का अभिनय मात्र कर रहा हूँ, और मुझे एक पवित्र मृत्यु की प्रतीक्षा है (यह सवाद तीन बार बोलता है। लोग चारो तरफ़ से घेर लेते हैं और उस पर हमला कर मार देते हैं। एक चीख निकलती है। मदारी दौड़ता हुआ आता है और चीखता है।)

मदारी — नहीं !!

(सारे कलाकार फ्रीज़ हो जाते हैं और मच पर लाल प्रकाश फैल जाता है।)

(पर्दा गिरता है)

— प्रश्न चिन्ह —

(यह नाटक ''सथारा'' शीर्षक से कई स्थानो पर मचित हो चुका है ।)

– प्रश्न चिन्ह –

पात्र –

1 मानव
2 कुवेर
3 कुटिल
4 कर्नल
5 मदिरा
6 पत्रकार 1
7 पत्रकार 2
8 सूत्रधार
(चार अन्य व्यक्ति)

(नाटक के सभी पात्र सस्वर कोरस गाते है ।)

आदमखोरो की बस्ती मे
हम अमन की बसी बजाते है
मरघट मे सोये मुर्दो को
हम प्रणय का गीत सुनाते है ।

मानव मशीनगन बना आज
मानवता रह गई नारो मे
सारी खुशिया कैद हो गई
एटम के गुब्बारो मे ।

खाने को उग रहे आज यहा
हथियार गोलिया हथगोले
अनाज नही पर नाज करो
इनसे भरकर खाली झोले ।

सूखी शाखो पर प्रसव हो रहे
सड़को पर भटक रहे कंकाल
माया मदिरा और मोहिनी
फैला रही है अपने जाल ।

श्वान और शिशु एक ढेर पर
चाट रहे जूठन सारा
धरती पर भूखा बिलख रहा
अपनी ही आखो का तारा ।

आतक, तस्करी ड्रग्स बने
जीवन के अग अभिन्न
मानस पर उभरा इसीलिये
फिर से एक प्रश्न चिन्ह ।
फिर से एक प्रश्न चिन्ह ।

(साइक पर प्रश्न चिन्ह उभर कर प्रकाश के साथ लुप्त होता है । संगीत उभरता है । प्रकाश फिर मंच के दाहिनी ओर उभरता है । सूत्रधार वहां खड़ा है ।)

सूत्रधार — नमस्कार । आपको लग रहा होगा कि इस नाटक की शुरुआत भी कुछ और नाटको जैसी ही हुई । जैसे सबसे पहले वही कोरस और फिर किसी सूत्रधार का अचानक मच के किसी कोने से प्रकट होकर प्रलाप करना, नाटक की भूमिका बाधना । फिर प्रस्तुति मे नयापन क्या हुआ ? वही पुरानी शराब नाम की नयी बोतल ।

लेकिन क्या आपको लगता नहीं कि हमारा वही पुराना आज नये नाम से बेचा जा रहा है । चाहे साहित्य हो, कला हो या सस्कृति ।

धरती और आकाश की प्रत्येक वस्तु वही है । हमारे वेदो और महाकाव्यो के अनुसार ये कभी नष्ट नहीं होतीं । केवल उनमे परिवर्तन होता है । हमने उसी परिवर्तन को "नया" कहकर उसका पर्याय बना दिया है ।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है । किन्तु शायद यह नियम इन्सान पर लागू नहीं होता । अगर लागू होता तो क्या इन्सान की मूल प्रवृत्ति मे परिवर्तन नहीं होता? लगता है आपको, मानव की मूल प्रवृत्ति मे परिवर्तन हुआ है ? वही शोषण, वही दमन, वही आतक, वही युद्ध । कल का आदम आज भी आदमखोर । पहले युद्ध के कारण हुआ करते थे और इन्सान लड़ते हुये मारे जाते थे । आज सैकड़ो निर्दोष सब्जी खरीदते हुये मारे जाते हैं । आज सबसे सस्ती चीज़ है मौत । यदि यही हाल रहा तो यह धरती एक दिन सगीनो का साया होगी और आसमान एटम बमो के धुएँ से भर जायेगा ।

इन्सानो ने धरती को तो बाँट लिया, आज वे आसमान को भी इसीलिये बाट रहे है ताकि अपने हिस्से के एटम वहा टाक सके । गोया आज का इन्सान स्वय अपनी सलीब अपने कधो पर ढो रहा है ।

कैसे बचेगा धरती का यह विलक्षण प्राणी ? फिर वही प्रश्न–चिन्ह ? एक और प्रश्न–चिन्ह ।

(प्रकाश लुप्त होकर मच के मध्य उभरता है ।)

(दाहिनी ओर से एक व्यक्ति आकर दूरबीन से कहीं दूर देखने का अभिनय करता है । बायीं ओर से दूसरा व्यक्ति सिगरेट पीता हुआ आता है, किन्तु उसकी सिगरेट बुझी हुई है । वह दो-तीन कश लेकर उसे फिर से जलाने का प्रयत्न करता है । किन्तु सिगरेट नहीं जलती ।)

कुटिल — धत्त तेरे की, यह सिगरेट है या किसी मुल्क की दान मे दी हुई बारूद ? कम्बख्त जलती ही नहीं ।

(फिर इधर-उधर देखकर, दूरबीन से देख रहे व्यक्ति के पास जाकर उसकी पीठ किसी दरवाजे की तरह खटखटाता है ।)

कुटिल — भाई साहब ए— भाई साहब । अमा आदमी हो या कुतुबनुमा की सुई ? एक ही दिशा मे देखते जा रहे हो । अमा सुनते हो ?

कुबेर — सुन रहा हूँ । मगर पहले आप मेरी बात भी सुन लीजिये कि यह मेरी पीठ है, कर्जा देने वाले किसी देश का दरवाज़ा नहीं, जिसे आप खटखटाते रहे । कहिये क्या बात है ?

कुटिल — आपके पास माचिस होगी ?

कुबेर — किसलिये चाहिये ? सिगरेट जलाने के लिये या किसी का घर जलाने के लिये ।

कुटिल — सिगरेट जलाने के लिये ।

कुबेर — तब नहीं है ।

कुटिल — क्यो ?

कुबेर — सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है ।

कुटिल — और दूसरो का घर जलाना ?

कुबेर — उससे अपने स्वार्थ की पूर्ती होती है ।

था, मगर साहब नो रिटर्न। कहीं से कोई धुआ ही उठता नज़र नहीं आता।

कुटिल — तो इसमे घबराने की क्या बात है ? अब आपकी और हमारी दोस्ती हो गयी है। कुछ ही दिनो मे चारो ओर आपको धुआ ही धुआ नज़र आयेगा।

कुबेर — मुझे धुआ बहुत पसन्द है। ऐसा महसूस होता है जैसे काली घटाएँ धरती से उठकर आसमान की बाँहो म समा जाना चाहती हैं। एक काली दीवार जो आँखो के सामने ससार के कालेपन को ढँक देती है।

कुटिल — इस पसन्द की मैं दाद देता हूँ। वैसे आतिशबाज़ी का शौकीन मैं भी हूँ। आपको धुआ पसन्द है और मुझे आग।

कुबेर — हूँ। आपने अभी तक यह नहीं बताया कि आप क्या है?

कुटिल — मेरा नाम कुटिल है। मैं शतरज का खिलाडी हूँ साहब। चाल चलना और मोहरे बिठाना ही मेरा काम है। कभी शह देता हूँ और कभी मात। यू समझिये कि बाज़ियो की बन्दगी करता हूँ।

कुबेर — वाह ! सच कहता हूँ, अगर आप मुझ पहले मिल जाते तो सिकन्दर का सपना अपना भी होता।

कुटिल — सपने तो आप अब भी देख सकतें हैं।

कुबेर — हा। मैं महसूस कर रहा हूँ, मुझे सपना देखना चाहिये। आखिर मैं माचिस के इतने कारखानो का मालिक हूँ।

कुटिल — तब तो आप दिन मे भी सपने देख सकते हैं।

कुबेर — हा। क्योकि मेरी माचिस सूरज की रोशनी को अपने धुएँ से ढँक सकती है।

कुटिल — हाँ। धुएँ की बात पर याद आया, आप पूरब की तरफ अभी धुएँ को तलाश कर रहे थे।

कुबेर — हाँ— हाँ— मेरी समझ मे नहीं आता है आखिर क्यो नहीं उठ रहा है उधर धुआ ?

(दूरबीन से फिर देखता है।)

कुटिल — ज़रा गौर से देखिये शायद कोई धुएँ की लकीर ही नज़र आ जाए।

(कुबेर फिर देखता है ।)

कुटिल — कुछ नज़र आया ?

कुबेर — हाँ ।

कुटिल — क्या ? (कुबेर चौंक कर फिर दूरबीन से देखता है ।)

कुटिल — मैंने कहा, क्या नज़र आ रहा है ?

कुबेर — वह व्यक्ति जिसको मैंने धुएँ के लिये माचिस दी थी ।

कुटिल — क्या कर रहा है वह ?

कुबेर — एक खूबसूरत औरत का पीछा ।

कुटिल — गोया हज़रत कुछ जलाने के बजाए खुद जलने के चक्कर मे हैं ।

कुबेर — ईडीयट ।

कुटिल — कौन ?

कुबेर — वही । (दूरबीन हटा लेता है ।)

कुटिल — ज़रा एक मिनिट अपनी दूरबीन मुझे दोगे ?

कुबेर — क्यो ?

कुटिल — मैं देखना चाहता हूँ क्या वह औरत वास्तव मे बहुत खूबसूरत है ?

कुबेर — क्यो ? क्या मैं उसे नहीं देख सकता ?

कुटिल — तो फिर देखते क्यो नहीं ।

(कुबेर फिर दूरबीन से देखता है ।)

कुटिल — क्या वह वास्तव मे खूबसूरत है ?

कुबेर — हाँ— बहुत खूबसूरत ।

कुटिल — ज़रा उसके हुस्न की रनिंग-कॉमेन्ट्री तो करो ।

कुबेर — उसकी आँखो मे चमक है । लगता है जैसे बारूद के दो भण्डारो मे आग लगी हो । उसकी ज़ुल्फे उसके कधो पर इस तरह बिखर रही हैं जैसे पैराशूट से उतर कर सैनिक इधर-उधर बिखर गये हो । उसकी चाल भी मतवाली है मानो कोई टैंक झूमता हुआ चला आ रहो हो ।

(सवाद बोलते हुये दोनो पीछे हटते हैं और बाहर निकलते हैं । सामने मदिरा और कर्नल हँसते हुये प्रवेश करते हैं ।)

कर्नल — हूँ ! तो आपको खूँखार कुत्ते पालने का शौक़ है ।

मदिरा — हाँ ! जानते हो कर्नल, मैं उनको किस तरह फीड करती हूँ? किस तरह खिलाती हूँ ?

कर्नल — इट शुड भी वैरी इन्ट्रैस्टिंग !

मदिरा — ऑफकोर्स ! बड़ा मज़ेदार एन्टरटेनिंग तरीका है मेरा !

कर्नल — कैसे ?

मदिरा — मैं कुछ भूखे बच्चो को इकट्ठा करती हूँ ! अपने सामने बिठाती हूँ और फिर तरह-तरह की चीज़े उनके सामने खाती हूँ ! मुझे खाते हुये देखकर उनकी भूख बढ़ जाती है और लार टपकने लगती है ! फिर मैं मक्खन लगे रोटी के टुकडे दूर फेकती हूँ ! बच्चे उन्हे खाने के लिये दौड पड़ते हैं। तभी मैं अपने शिकारी कुत्तो को भी छोड देती हूँ ! ज़ाहिर है बच्चे तो उन टुकडों तक पहुँच नहीं पाते लकिन मेरे कुत्ते बच्चा तक ज़रूर पहुँच जाते है और फिर जो एक रोमाचक सीन बनता है तो बस मजा आ जाता है !

कर्नल — वन्डरफुल ! रीयली वन्डरफुल !

मदिरा — अब बताओ ! किया है, तुमने अपने आपको कभी इसी तरह एन्टरटैन ?

कर्नल — हाँ–हाँ किया है कई बार ! लेकिन दूसरे तरीक़े से !

मदिरा — कैसे ?

कर्नल — मदिरा—आ ऽ ऽ किस्सा पिछली लड़ाई का है ! दुश्मन का एक जासूस हमारे हाथ लग गया ! उससे किस तरह सारी बात उगलवायी जाये, इसके लिय एक एक्सपैरिमैन्ट करना था ! तो हमने पास ही के गाव के एक सिविलियन को पकडा और उसके शरीर को पूरी तरह बाधकर एक मेज़ पर लिटा दिया ! फिर हमने एक पहाड़ी चूहा पकड़ा और उस चूहे को उस आदमी के पेट पर रखकर उसे एक कटोरे से ढँक कर कटोरे को भी वहा बाँध दिया !

मदिरा — रीयली इन्ट्रेस्टिंग ! फिर ?

कर्नल — इसके बाद कटोरे पर आग रखकर कटोरे को गर्म किया। गर्मी पाकर पेट पर चूहे ने उछल कूद शुरू करदी ! हमने कटोरे को और गर्म किया ! चूहे को बाहर निकलने का

रास्ता नहीं मिला। उसने पेट कुतरना शुरू कर दिया। हम गर्मी बढ़ाते रहे चूहा भीतर उस आदमी का शरीर कुतरता रहा और अन्त मे कुतरता हुआ बगल से बाहर निकल गया। उस समय उस आदमी की जो हालत थी बस उसे देखकर मज़ा आ गया। इट वाज़ सो इन्ट्रेस्टिंग कि मैं तुम्हे बता नहीं सकता।

मदिरा — (ताली बजाते हुये) वाह—वाह! ब्यूटीफुल! मज़ा आ गया कर्नल! रीयली यू आर ग्रेट!

कर्नल — थैंक्यू मदिरा! हाँ तो मैं अपनी बात पर फ़िर लौटता हूँ।

मदिरा — कौन-सी बात ?

कर्नल — वही जो मैंने आपको वहा बतायी थी कि अगर आप मेरा साथ दे तो मैं दुनिया की महारानी का ताज आपके सर पर सजा दूँ।

मदिरा — लेकिन कर्नल यह कैसे सम्भव है ?

कर्नल — दुनियाँ थ्री बिग डब्ल्यूज़ के बारे मे ही अब तक ज्यादा जानती है। चौथे बिग डब्ल्यू के बारे मे नहीं जो इन तीनो से ज्यादा खतरनाक है। वह मेरी मुट्ठी मे है और वह चौथा बिग डब्ल्यू है वार। युद्ध। मेरी मुट्ठी मे युद्ध है मदिरा जो कभी भी, कहीं भी, किसी पर थोपा जा सकता है।

(कुबेर और कुटिल दोनो पीछे से प्रवेश करते है। दूरबीन कुटिल के हाथो मे है। वह मदिरा को देख रहा है। दोनो धीरे-धीरे आगे बढ़ते है।)

मदिरा — लेकिन दुनियाँ युद्ध की नहीं सुन्दरता की पुजारी है।

कर्नल — इसीलिये तो मैं भी तुम्हारा पुजारी बन गया हूँ। यह दुनियाँ भी तुम्हारी पुजारी होगी और मेरी दास।
मदिरा, एक बार, केवल एक बार सूरज की रोशनी को धुएँ के बादल से ढँक देने मे मेरी मदद करो, फिर देखो, रोशनी भी हमारी क़ैद मे होगी।

कुबेर — नहीं होगी। और धुआ भी नहीं उठेगा। क्योकि माचिस तुम्हारे पास नहीं, मेरे पास है।

कर्नल — ओह, मिस्टर कुबेर ?

कुबेर — बात मत करो मुझसे । मैंने तुम्हें आतिशबाज़ी के लिये भेजा था। मगर तुम तो खुद ज़मीन-चक्र बन कर इसके चारो ओर नाचने लगे । याद रक्खो कर्नल । अगर माचिस नहीं जली तो हम सब अंधेरे मे डूब जायेंगे । दीवाला निकल जायेगा मेरा ।

कर्नल — नहीं निकलेगा कुबेर । जब तक कर्नल है, तुम्हारे कारखाने चलते रहेंगे । इधर आओ, मैं समझाता हूँ । एक्सक्यूज़ मी मदिरा ।

(कर्नल कुबेर को लेकर मच के दाहिने कोने की ओर जाता है । दोनो महत्त्वपूर्ण बाते करने का मूकाभिनय करते हैं ।)

(इधर कुटिल दूरबीन से मदिरा को देखता हुआ उसके क़रीब आता है ।)

कुटिल — वाह–वाह–वाह । क्या बात है ?

मदिरा — ए । इस तरह क्या देख रहे हो तुम ?

कुटिल — आपकी छवि निहार रहा हूँ ?

मदिरा — ओह थैंक्यू । कैसी लगती हूँ मैं ?

कुटिल — अनिंद्य सुन्दर ।

मदिरा — मेरी आँखे ?

कुटिल — बारूद के भण्डार ।

मदिरा — (हसती है ।) अच्छा । मेरी बिखरी जुल्फे ?

कुटिल — वाह । जैसे रात के अन्धेरे मे पैराशूट से उतर कर सैनिक कधा पर बिखर गये हो ।

मदिरा — ब्यूटीफुल । और मेरी चाल ?

कुटिल — जैसे कोई टैंक बस्तियो को रौंदता हुआ आगे बढ़ता चला जा रहा हो ।

मदिरा — रीयली ? ऐसी हूँ मैं ?

कुटिल — जी हा, पूरी फौजी छावनी ।

(मदिरा जोर से हँसती है । कर्नल का ध्यान टूटता है । वह मदिरा के तरफ देखता है और दौडकर उसके पास आता है।)

कर्नल — क्या हुआ मदिरा ?

मदिरा — (हसते हुये) यह   यह   कह रहा है

कर्नल — ए, कौन हो तुम ? यहाँ क्या कर रहे हो ?

कुटिल — आपकी फ़ौजी छावनी मे जासूसी कर रहा हूँ ।

कर्नल — शट-अप !   मैं   तुम्हे

कुबेर — (आते हुए) रुको कर्नल ! यह तो अपने ही दोस्त हैं । कुटिल ।

कर्नल — कुटिल ?

कुबेर — हाँ शतरज के बहुत अच्छे खिलाडी हैं । चाल चलना और मोहरे बिठाना इन्हे खूब आता है । हमारे लिये बहुत काम के साबित होगे ।

कर्नल — ओह्र । सौरी मिस्टर कुटिल । मैं आपको जानता नहीं था ।

कुटिल — जानते तो हम अब भी एक दूसरे को नहीं हैं । जिस दिन जान जायेगे या पहचान जायेगे तो फिर किसी फौजी छावनी के पास खडे नहीं होगे ।
(सब हसते हैं ।)

कर्नल — मदिरा ! मेरे दोस्त से मिलो । यह हैं मिस्टर कुबेर । कई कारखानो के मालिक । इनका और मेरा काया और छाया का साथ है ।

मदिरा — आपसे मिलकर खुशी हुई मिस्टर कुबेर ।

कुबेर — खुशी मुझे भी बहुत है । कर्नल ने अभी मुझे सब कुछ समझा दिया है । अब सिकन्दर का सपना अपना होगा।

कर्नल — ज़रूर होगा कुबेर । हम एक नहीं, चार हैं । चार बिग डब्ल्यूज़ । अब दुनियाँ हमारी मुट्ठी मे होगी । धरती पर हमारा साम्राज्य होगा ।

कुटिल — ठहरिये, ठहरिये । एक गडबड होगी । साम्राज्य तो एक का ही होगा । फिर तीन क्या करेगे ?

कर्नल — तीन ? हाँ तीनो का भी साम्राज्य होगा ।

कुटिल — कैसे ?

कुबेर — चलो, हम धरती के टुकडे कर लेते हैं ।

कुटिल — लेकिन कौन, किस टुकडे का मालिक होगा ?

कर्नल — नो प्रॉब्लम । हम कितने हैं ?

कुटिल — चार ।

कर्नल — और दिशाऐं कितनी हैं ?

कुटिल — चार ।

कुबेर — हम एक-एक दिशा बाँट लेते हैं ।

कुटिल — लेकिन कौन-सी दिशा किसकी होगी ?

कर्नल — तुम बडे वाचाल हो और उत्तर देने मे माहिर । इसलिये उत्तर दिशा तुम्हारी हुई ।

कुबेर — तो फिर यह पूरब मुझे दे दो । सूरज हमेशा पूरब से उगता है और रोशनी सदा पूरब से आती है । मैं अब उसे नहीं आने दूगा ।

कर्नल — ठीक है । बाक़ी दो दिशाओ का फैसला मैं और मदिरा कर लेगे ।

कुटिल — जब बाँट ही रहे हैं तो धरती के साथ-साथ आकाश को भी क्यो नहीं बाँटले ।

कुबेर — नहीं । आकाश बँट गया तो फिर अन्तरिक्ष भी बाँटना पडेगा। इसलिये अभी आकाश रहने दो ।

कर्नल — ठीक है । तो आइये इस ख़ुशी के मौके पर हम जश्न मनाए—मनोरजन करे ।

मदिरा — रीयली मैं भी बोर हो रही हूँ । लेकिन कौन करेगा हमारा मनोरजन ?

कुटिल — अगर आप चाहे तो एक शतरज की बाज़ी हो जाये ?

मदिरा — ओह नो । इट्स बोरिंग ।

कर्नल — एक बात का ध्यान रखना कुटिल । हमारे लिये यही अच्छा है कि हम चारो कभी शतरज नहीं खले ।

कुबेर — यहा कोई नज़र भी तो नहीं आ रहा है ।

मदिरा — तो फिर कौन करेगा हमारा मनोरजन ?

(सामने दर्शको के बीच से फटेहाल एक व्यक्ति मच की ओर आता है ।)

कुबेर — अरे, यह कौन आ रहा है इधर ?

(चारो उसी ओर देखते हैं ।)

कुटिल — पहनावे से लगता है कोई जोकर है ।
मदिरा — जोकर ? यू मीन हँसाने वाला ?
कर्नल — यस । मुझे तो उसकी यह हालत देखकर ही हँसी आ रही है ।

(हसता है ।)

कुबेर — देखो इसके शरीर पर तो पूरे कपड़े भी नहीं है ।
कुटिल — और पाव मे जूता भी नहीं है ।
मदिरा — इसका पेट भी पिचका हुआ है ।
कर्नल — इससे अच्छा जोकर हमको और कहाँ मिल सकता है ?

(चारो सवाद बोलते हुए हँसते रहते है । तब तक मानव धीरे-धीरे दर्शको के बीच से मच पर पहुँच जाता है । मच पर पहुँचकर वह इन चारो को देखता है और फिर आगे बढ़ जाता है । चारो उसके पीछे व्यग्य कसते हुये आते हैं।)

मदिरा — भूखा ।
कर्नल — नगा ।
कुटिल — हड्डियो का ढाँचा ।
कुबेर — जोकर ।
मदिरा — जानवर ।
कर्नल — लाचार ।
कुटिल — बेचारा ।

(मानव कोई उत्तर नहीं देता । वह धीरे-धीरे गम्भीर मुद्रा मे आगे बढ़ता रहता है । चारो व्यग्य कसना बन्द करके कुत्तो की तरह भाकना शुरू कर देते है । मानव मच के बीच मे बने स्थान पर जाकर बैठ जाता है । चारो चुप होकर एक दूसरे की तरफ देखते हैं ।)

कुबेर — यह तो चुपचाप बैठ गया ।
कुटिल — अगर बैठ गया है तो उठाया भी जा सकता है ।
कर्नल — मारूँ साले को, अपने बूट की एक ठोकर ?
मदिरा — या जाकर मैं इसे घायल कर दूँ ?
कुटिल — अभी नहीं । पहले हम इससे बात करते हैं कि यह कौन है और कहा से आया है ?

(चारो मानव के पास जाकर उसे घेर लेते हैं।)

कुबेर — ए ! कौन हो तुम ?

मानव — तुम लोगो को क्या लग रहा हूँ ?

मदिरा — जोकर और जानवर !

कुटिल — क्या नाम है तुम्हारा ?

मानव — जोकर और जानवर का भी कोई नाम होता है ।?

कर्नल — हाँ, होता है । बताओ क्या नाम है तुम्हारा ?

मानव — जानना ही चाहते हो तो मेरा नाम "मानव" है ।

कर्नल — मानव ? कहाँ से आ रहे हो ?

मानव — पूरब से ।

कुटिल — हमारा मतलब है तुम रहते कहाँ हो ?

मानव — यह पूछो मैं कहाँ नहीं रहता ?

मदिरा — मुझे तो कोई पागल लगता है ।

कुबेर — ए, उठो ! उठो ! [हाथ से बाँह को पकड़ते हुए] देखते क्या हो, खड़े हो जाओ !

मानव — क्यो ?

कुटिल — इसलिये कि तुम्हे नाचकर हमारा मनोरंजन करना है ।

कर्नल — देख क्या रहे हो, खड़े हो जाओ ।

मानव — मैं बार बार उठ नहीं सकता ।

कुबेर — तुम्हें उठना होगा । उठो और नाचो ।

मानव — [illegible], मैं नहीं उठ सकता । नाच नहीं सकता । मैं कई दिनो से भूखा हूँ ।

कुबेर — ओह ! चिन्ता मत करो [illegible] पास बहुत कुछ है ।

मानव — सच ?

कुटिल — हाँ । यह कई [illegible]

मानव — दोनों के मालिक ? [illegible]

कुबेर —

मानव —

कुटिल — तुम्हे फसल से क्या मतलब ? तुम्हे तो कुछ खाने को चाहिए न ?

मानव — हाँ—हाँ हाँ—— ।

कुबेर — कुछ गोलियाँ हैं । खाओगे ?

मानव — गोलियाँ ?

कर्नल — हाँ बोलो, बन्दूक से खाओगे या पिस्तौल से ?

(मानव हँसता है ।)

मदिरा — हसते क्यो हो ?

मानव — तुम लोग अभी मुझको जोकर कह रहे थे न ? अरे जोकर तो तुम लोग हो । मसखरे कहीं के ।

(मानव हँसते हुए लेट जाता है । चारो उसकी ओर देखते रहते हैं । प्रकाश मन्द होता है और फिर मानव के खर्राटे उभरते हैं ।)

(चारो एक दूसरे की ओर देखते हैं ।)

मदिरा — लो, यह तो सो गया ।

कुटिल — मेरी समझ मे नहीं आता यह भूखे लोग इतने चैन से कैसे सो जाते हैं ?

कुबेर — तुमने सुना नहीं, इस दो कौड़ी के आदमी ने हमारा अपमान किया है । हमको जोकर कहा है ।

कर्नल — मैं अभी इसका भेजा बाहर निकालता हूँ ।

(पिस्तौल निकालता है ।)

कुटिल — ठहरो ! शायद इसको इस बात का अहसास नहीं है कि हम लोग कितने ऊँचे और खतरनाक हैं ।

मदिरा — उफ ! मैं तो बोर हो रही हूँ । तुम लोग आदमी होकर भी एक जानवर को नहीं नचा सकते ?

कुटिल — डोन्ट वरी मदिरा, इसे हमारे मनोरंजन के लिये नाचना ही पडेगा ।

मदिरा — तो फिर कुछ ऐसा करो न, जिससे इसको सबक मिले और हमारा एन्टरटेन भी हो ।

कुबेर — ऐसा ही होना चाहिए ।

कुटिल — सुनो ! यह कोई आसानी से काबू न आने वाला इन्सान

कुबेर — अरे, तुम इतने बड़े कहाँ हो ? जानते हो, जो पचपन तो बचपन ।

कुटिल — क्यो, हो गये न अब तो बच्चे ?

(चारो हसते है ।)

मानव — लेकिन यह, इतने सारे हथियार ?

चारो — तुम्हारी वर्षगाँठ पर हम तुमको यह भेट दे रहे हैं ।

मानव — इतने हथियार ?

चारो — हाँ । बोलो, तुम्हे कौन-सा खिलौना पसन्द है ।

कुबेर — अपने दाये ।

कुटिल — बाए ।

मदिरा — ऊपर ।

कर्नल — नीचे ।

चारो — अच्छी तरह से देख लो ।

(मानव चारो ओर देखता है ।)

मानव — मुझे यह सब पसन्द नहीं है । इनको देखने से ही मुझे दशहत होती है ।

(चारो हसते हैं ।)

चारो — अब बोलो । हमारी ताल और लय पर नाच कर हमारा मनोरजन करोगे न ?

मानव — मैने कहा न मै नाच नहीं सकता । मेरे पाँवो म ताकत नहीं है । मै भूखा हूँ ।

कुबेर — तुम्हारे मामने केक भी रक्खा है ।

मानव — केक ?

(केक की ओर देखता है ।)

— हाँ, तुम्हारे जन्मदिन का केक ।
हाँ— हाँ-हाँ——

(केक उठाकर खाने की कोशिश करता है ।)

ч को रोकते हुए) ओह नो— यह तुम्हारे नहीं, हमारे लिये हैं ।

। केक लेकर खाती है ।)

दूसरा टुकड़ा उठाता है तो कुटिल रोकता है ।

नहीं है। इसलिये सबसे पहले हमको इसे डराना होगा। कुबेर तुम इसके चारो ओर अपने हथियारो का घेरा डाल दो। कर्नल तुम मोर्चे पर जम जाओ, और मदिरा तुम इस बात का ध्यान रक्खो कि यह जागने न पाए, क्योकि इसके जागने से पहले ही हमको यह सब कर लेना होगा।

(प्रकाश लुप्त होता है। सगीत उभरता है।)

(जब पुन प्रकाश फैलता है तो दिखाई देता है कि मानव के चारो ओर हथियारो का घेरा है। सामने साइक पर भी हथियारो की परछाइयाँ उभर रही हैं। मानव के सिर पर बडे-बडे गुब्बारे लटक रहे हैं, जिन पर एटम लिखा हुआ है। सामने एक मेज़ पर एक केक रक्खा है और उस पर पाँच मोमबत्तिया जल रही हैं।) सामने दर्शको की ओर पीठ किये एक तरफ कर्नल खडा है। दूसरी ओर कुबेर। मदिरा मानव के पाँवो की ओर खडी है और सिर के पास कुटिल खडा है।
कुछ क्षणो पश्चात् मानव अगडाई लेकर उठता है।)

(चारो गाते हैं।)

चारो — हैप्पी बर्थ डे टू यू
हैप्पी बर्थ डे टू यू मानव
हैप्पी बर्थ डे टू यू
मैनी हैप्पी रिटर्न्स ऑफ दी डे

(चारो तालियाँ बजाकर हँसते हैं।)

मानव — (हैरानी से) यह यह सब क्या है ?

मदिरा — आज तुम्हारा जन्म दिन है।

मानव — जन्म दिन, मेरा जन्म दिन ?

कुटिल — हाँ। क्या हम तुम्हारा जन्म दिन नहीं मना सकते ?

मानव — लेकिन मेरा जन्म दिन तो आज नहीं है और फिर इतने बडे का जन्म दिन ? मैं पचपन साल का हूँ।

कुबेर — अरे, तुम इतने बडे कहाँ हो ? जानते हो, जो पचपन तो बचपन ।

कुटिल — क्यो, हो गये न अब तो बच्चे ?

(चारो हसते हैं ।)

मानव — लेकिन यह, इतने सारे हथियार ?

चारो — तुम्हारी वर्षगाँठ पर हम तुमको यह भेट दे रहे हैं ।

मानव — इतने हथियार ?

चारो — हाँ । बोलो, तुम्हे कौन-सा खिलौना पसन्द है ।

कुबेर — अपने दाये ।

कुटिल — बाए ।

मदिरा — ऊपर ।

कर्नल — नीचे ।

चारो — अच्छी तरह से देख लो ।

(मानव चारो ओर देखता है ।)

मानव — मुझे यह सब पसन्द नहीं है । इनको देखने से ही मुझे दशहत होती है ।

(चारो हसते हैं ।)

चारो — अब बोलो । हमारी ताल और लय पर नाच कर हमारा मनोरजन करोगे न ?

मानव — मैंने कहा न मैं नाच नहीं सकता । मेरे पाँवो मे ताक़त नहीं है । मैं भूखा हूँ ।

कुबेर — तुम्हारे सामने केक भी रक्खा है ।

मानव — केक ?

(केक की ओर देखता है ।)

कुटिल — हाँ, तुम्हारे जन्मदिन का केक ।

मानव — हाँ— हाँ-हाँ——

(केक उठाकर खाने की कोशिश करता है ।)

मदिरा — (मानव को रोकते हुए) ओह नो— यह तुम्हारे लिये नहीं, हमारे लिये है ।

(मदिरा केक लेकर खाती है ।)

(मानव दूसरा टुकड़ा उठाता है तो कुटिल रोकता है ।

तीसरा उठाता है तो कुबेर और चौथे टुकड़े पर कर्नल रोकता है ।)

कर्नल — यह हम खाएंगे ।

(चारो हसते हुए केक खाते हैं । मानव देखता रहता है।)

मानव — *अगर सब तुम्हीं लोग खा गये तो मैं क्या खाऊगा ?*

चारो — हमारी जूठन ।

मानव — जूठन क्यो ?

कुबेर — इसलिये कि आज तुम बच्चे हो ।

कुटिल — और बच्चे जब किसी की जूठन चाटते हैं तो हमको बहुत अच्छा लगता है ।

मदिरा — जूठन का ढेर, बच्चो का झुड और पास ही कुत्ता की भौं भौं ।

(चारो कुत्तो की तरह भौंकते हैं ।)

कर्नल — रीयली इट्स ए ग्रेट एन्टरटेन्मेन्ट ।

(चारो हसते हैं ।)

कुबेर — लो मैं अपनी थोड़ी जूठन फेंकता हूँ । जाओ चाट लो इसे ।

मानव — नहीं । तुम लोगो की जूठन खाने से मैं मरना बेहतर समझूँगा ।

कुटिल — लेकिन तुम मरोगे भी कहाँ ?

मानव — क्यो ?

कुबेर — अब हम तुम्हे मरने ही नहीं देगे ।

मानव — क्यो ? बदनामी से डरते हो ?

कर्नल — बदनामी ?

मदिरा — कैसी बदनामी ?

मानव — तुम लोगो की बदनामी । आदमी को भूखा मार दोगे तो क्या बदनामी नहीं होगी ?

(चारो हसते हैं ।)

मानव – जानता हूँ । ये तुम्हारे विनाश के बीज हैं ।
चारो – एक बार फिर सोच लो ।
मानव – सोचना तम्हे हैं । मैं सघर्ष के लिये तैयार हूँ ।
चारो – तो तुम नहीं मानोगे ?
मानव – नहीं—— नहीं—— नहीं ।।
चारो – तो तुम्हारी ज़िद का जवाब है जेल ।

(साइक पर जेल की सलाखे उभरती है । चारो ताली बजाते हैं । जगली वेशभूषा मे चार व्यक्ति भाले लिये "हो— हो— हो—" करते हुये प्रवश करते हैं और मानव को घेर लेते हैं । सगीत उभरता है और प्रकाश लुप्त होता है ।)

(प्रकाश पुन फैलता है । मानव सामने लेटा हुआ है । भाला लिये व्यक्ति उसके चारो तरफ पहरा दे रहे हैं । पास ही एक कनस्तर रखा है ।बायीं ओर से दो व्यक्ति प्रवेश करते हैं । उनकी पीठ पर "पत्रकार" लिखा है । दोनो पहरा देते हुये जगली व्यक्तियो से छुपते-छुपाते हुये मानव के पास पहुँच जाते हैं ।)

पत्रकार – हमने सुना है आप कई दिनो से भूखे हैं । आपको भोजन नहीं दिया जा रहा है । क्या यह बात सही है ?
मानव – (मानव किसी तरह चारपाई से उठकर) हाँ यह सत्य है। लेकिन प्रश्न भूख का नहीं मानवता का है । अन्याय और अतिक्रमण के विरुद्ध सघर्ष का है——और

(पत्रकारो को देखकर चारो जगली व्यक्ति "हो— हो— हो— हो" करते हुये कनस्तर पीटना शुरू कर देते हैं । मानव के केवल होठ हिलते दिखाई देते हैं, मगर शब्द सुनाई नहीं देते । तभी कुबेर कुटिल, कर्नल और मदिरा भी आ जाते हैं । चारो मानव के पीछे खडे होकर शोर के बीच बोलते हैं ।)

कुबेर – हमसे न मानव को खतरा है, न मानवता को ।
कुटिल – हम तो मानव को सुखी और तन्दुरूस्त देखता चाहते हैं।
कर्नल – मानब की हत्या करने का हमारा कोई इरादा नहीं । हम तो शान्ति चाहते हैं ।

मदिरा — फिर भी यदि कहीं कोई गड़बड़ है तो हम वार्ता के लिये तैयार हैं ।

एक पत्रकार— (चीख कर) फिर भी मानव परेशान क्यो है ?

दू. पत्रकार — उसके चारो तरफ पहरा क्यो है ?

कुबेर — पहरा मानव के खिलाफ नहीं है ।

कुटिल — पहरा तो मानवता की रक्षा के लिये है ।

कर्नल — मानवता को खतरा हमसे नहीं है, बल्कि मानव से है ।

मदिरा — मानव से मानवता को बचाने के लिये ही यह पहरा है ।

एक पत्रकार— हमारी समझ मे नहीं आ रहा है आप लोग क्या कह रहे हैं?

दू. पत्रकार — हमे मानव को सुनने दीजिये ।

कुबेर — जरुर । हम स्वय आपको मानव से मिलवायेगे ।

कुटिल — किन्तु शाम को कॉकटेल पार्टी के बाद ।

दोनो — कॉकटेल ?

कर्नल — हाँ । उसके बाद फाइव स्टार होटल मे आपका डिनर होगा।

दोनो — फाइव स्टार मे डिनर ?

मदिरा — हाँ । उसके बाद एक अच्छी-सी गिफ्ट भी होगी ।

दोनो — गिफ्ट भी ?

चारों — हाँ । कॉकटेल—— डिनर— गिफ्ट ।

दोनो — रिपोर्ट क्या देनी है ?

(कर्नल, कुबेर, कुटिल और मदिरा चारो हसते हैं ।) ''हो-हो-हो-हो'' व कनस्तर का शोर बढ़ जाता है । मानव बोलने का प्रयत्न करता रहता है । उसके होठ हिलते रहते हैं । मगर शब्द सुनाई नहीं देते । प्रकाश धीरे-धीरे लुप्त होता है ।)

(पुन प्रकाश फैलता है तो दिखाई देता है कि कुबेर, कुटिल, कर्नल और मदिरा कुछ सोचने की मुद्रा मे इधर-उधर टहल रहे हैं । मानव लेटा है ।)

कर्नल — उसके चेहरे पर आक्रोश है ।

कुटिल — है हड्डियो का ढाचा, फिर भी जोश है ।

कुबेर — लगता है, उसके अन्दर ज्वाला है । सिर्फ बाहर से खामोश है ।

कर्नल — इसीलिये कहता हूँ, इससे पहले कि उसके भीतर की ज्वाला बाहर निकले, उसे शान्त कर देना चाहिये ।

कुटिल — हमारे पहरे मे वह मर तो वैसे ही जायेगा । लेकिन उसके मरने से पहले उसका एक राज़ मालूम करना होगा ।

मदिरा — राज़ ? कौन-सा राज़ ?

कुटिल — यही कि आखिर उसके पास ऐसा क्या है जो इन हालात के बीच भी उसे ज़िन्दा रक्खे हुये है और हमसे सघर्ष करने की शक्ति देता है ।

कुबेर — तुमने एक बात महसूस की ? जब-जब हम उसके करीब गये हैं, तब-तब उसके बदन से एक अजीब-सी खुशबू एक महक उठती हुई महसूस होती है ।

कर्नल — हाँ, मैंने भी महसूस किया है ।

मदिरा — और मैंने भी ।

कुटिल — आखिर वह खुशबू है क्या ? शायद यही वह राज़ है जो उसे हमसे टकराने की हिम्मत देता है ।

मदिरा — हो सकता है वह कोई बढ़िया सैन्ट इस्तेमाल करता हो।

कर्नल — डोन्ट बी सिली । इस हालत मे उसके पास इत्र कहाँ से आएगा ?

मदिरा — दैन वाट इज दैट ?

कुटिल — यही तो हमको जानना है ।

कुबेर — और फिर उसे, उससे छीन लेना है ।

कर्नल — तो फिर देर किस बात की है ? आओ अभी मालूम करते हैं ।

(चारो मानव के क़रीब जाकर उसको घेर लेते हैं । मानव उनको देखकर खड़ा हो जाता है ।)

चारों — तुम्हीं मानव हो न ?

(व्यग्य से पूछते हैं ।)

मानव — मानव तो तुम लोग भी हो ।

चारो — लेकिन हम तुम्हारे जैसे नहीं है ।

मानव — हाँ। इसीलिये दानव हो।
चारों — हमारे और तुम्हारे बीच बहुत अन्तर है।
मानव — अगर नहीं होता तो इस धरती पर संघर्ष ही क्यों होता?

(मानव उठकर आगे बढ़ता है।

चारों — कल तक तो तुम उठ भी नहीं सकते थे आज चलने लगे?
मानव — हां, संघर्ष जो छिड़ गया है।
चारों — डर नहीं लग रहा तुम्हें मृत्यु से?
मानव — मैं नहीं जानता डर क्या होता है?
चारों — और मृत्यु?
मानव — मैंने गीता पढ़ी है, इसलिये जानता हूँ कि मृत्यु क्या है।
चारों — और इसके लिये तुम तैयार हो?
मानव — तैयार तो तुम जैसे लोगों को भी रहना चाहिये।
चारों — नहीं! हार हमारी नहीं होगी।
कुबेर — हमारे पास हथियारों का भण्डार है।
कुटिल — राजनीति का चक्रव्यूह है।
मदिरा — कुटिलता की चाल है।
कर्नल — और तुम पर लादने के लिये युद्ध है।
चारों — और तुम, इन सबके सामने निर्बल और अकेले हो।
मानव — फिर तुम्हें किस बात की प्रतीक्षा है?
कुबेर — एक राज़ जानने की।
मानव — राज़? कौनसा राज़?
कुटिल — तुम्हारे पास ऐसा क्या है, जो इन सबके बीच तुम्हें चैन से सोने देता है?

(मानव हँसकर आगे बढ़ता है।)

कर्नल — बोलो, क्या है वह?
मानव — मेरे जैसे मानव के पास तो केवल मानवता है।
कुबेर — नहीं। एक खुशबू है जो इत्र से भी ज्यादा मीठी है। वह क्या है?
मानव — मैं कोई इत्र इस्तेमाल नहीं करता।
कुटिल — तो फिर तुम्हारे बदन से जो महक उठती है वह क्या है?
मानव — बदन से?

चारो — हाँ ।

मानव — वह ? अरे वह तो मेरे परिश्रम और पसीने की महक है।

चारो — सच कहते हो ?

मानव — हाँ । मैं झूठ नहीं बोलता ।

चारो — हूँ । तो फिर हमको तुम्हारा वही परिश्रम और पसीना चाहिये ।

मानव — लेकिन वह तो तुम्हारे पास भी है ।

चारो — हमारे पास ?

मानव — हाँ । लेकिन तुमने उस महक को कभी महसूस ही नहीं किया । क्योकि तुमने तो हमेशा दूसरो का खून बहाया है, अपना पसीना नहीं ।

चारो — खून तो हम तुम्हारा भी बहा देगे । लेकिन तुम्हारा पसीना लेकर ।

मानव — मेरा परिश्रम और पसीना मेरी पूजी है । मैं उस पर तुम्हारा अधिकार नहीं होने दूगा ।

चारो — हमको छीनना भी आता है ।

मानव — कोशिश करके देख लो ।

चारो — यह तुम्हारा आखिरी फैसला है ?

मानव — हाँ ।

चारो — ठीक है । हमारा आखिरी फ़ैसला भी यही है कि तुम्हारे परिश्रम और पसीने पर अब हमारा अधिकार होगा ।

(सगीत उभरता है और प्रकाश लुप्त होता है ।)

(प्रकाश पुन फैलता है । मच के दाहिने कोने मे कर्नल, कुबेर, कुटिल व मदिरा क्रोधित मुद्रा मे बैठे सोच रहे हैं। अचानक कर्नल खडा होता है ।)

कर्नल — उसने फिर हमारी इन्सैल्ट की है ।

कुटिल — जब तक उसके पास परिश्रम की पूजी है, वह इसी तरह हमारा अपमान करता रहेगा ।

कुबेर — इस पूजी पर अब हमारा अधिकार होना चाहिये ।

मदिरा — और उसकी महक को उसके बदन से अलग कर देना चाहिये ।

मदिरा — लेकिन उसके जिन्दा रहते हुये यह होगा कैसे ?

कुटिल — मैं बताता हूँ। तुम लोगो ने मशहूर इत्र शैनल तीन का नाम सुना है ?

कुबेर — सुना है।

मदिरा — और मैं तो उसे इस्तमाल भी करती हूँ।

कुटिल — आप लोग जानते हैं, वह इत्र किस तरह निकाला जाता है?

तीनो — नहीं।

कुटिल — मैं बताता हूँ। यह इत्र अफ्रीका मे पायी जाने वाली सिवेट बिल्ली से निकाला जाता है। सिवेट बिल्ली के सिर को स्टील के दाँतो वाले एक पिंजरे में जकड़ कर उस पर कोड़े बरसाये जाते है। इस जकड़न और मार से बिल्ली पागल हो जाती है। फिर एक व्यक्ति उसकी टाग और पूछ पकड कर पिंजरे से बाहर खींचता है तो दूसरा व्यक्ति एक चाकू से उसकी एक ग्रन्थी जिसमे इस यातना से सुगन्ध भर जाती है, मे चीरा लगाता है और बिल्ली के मरने से पहले सारी सुगन्ध बाहर निकाल लेता है। बिल्ली को जितनी यातना दी जाती है उतनी ही ज्यादा सुगन्ध इकट्ठी होती जाती है।

कुबेर — तो तुम्हारा मतलब है कि हम भी

कर्नल — हाँ, हम भी मानव से उसके पसीने की सुगन्ध इसी तरह अलग कर देगे।

मदिरा — और फिर उसको खत्म कर देगे।

कर्नल — मैं एक ही गोली मे उसका काम तमाम कर दूगा।

कुबेर — नहीं, तुम अकेले उसे नहीं मार सकते।

कुटिल — उसने हम चारो का अपमान किया है। इसलिये हम चारो उस पर वार करेगे।

मदिरा — और अपने-अपने तरीके से उसे मारेगे।

कर्नल — ठीक है। इससे अच्छा एन्टरटेन्मेन्ट और होगा भी क्या?

कुटिल — हम मानव के शरीर को चार हिस्सो मे बाट लेते हैं। आप लोग अपनी-अपनी पसन्द का हिस्सा बताइये।

कर्नल — लेडीज फर्स्ट।

मदिरा — मुझे कलेजी बहुत पसन्द है। मुझे उसका कलेजा चाहिये।

कुटिल — एण्ड आई लाइक भेजा। मुझे उसका सिर चाहिये।

कुबेर — मैं उसके हाथ तोड़ दूगा।

कर्नल — तो फिर उसके पाँव मेरे हुये । मैं उसे भागने नहीं दूगा।

(सगीत उभरता है । प्रकाश लुप्त होता है ।)

जब प्रकाश पुन फैलता है तो दिखाई देता है कि मानव पर एक जाल है । उसका सिर कँटेदार तारो से जकडा है और वह चार रस्सियो से बधा है । गले की रस्सी का दूसरा सिरा मदिरा के हाथ मे, पेट पर बधी रस्सी का सिरा कुबेर के हाथ मे, हाथो पर बधी रस्सी का सिरा कुटिल के हाथ मे और पावो पर बधी रस्सी का सिरा कर्नल के हाथ मे है । इनके चारो ओर जगली लोग "हो-हो—हो-" करके नाच रहे हैं । मानव तडप रहा है और कुबेर, कुटिल, मदिरा और कर्नल हँस रहे हैं ।

चारो — अपना परिश्रम और पसीना हमको दे दे मानव ।

मानव — नहीं ।

चारो — नहीं ?

मानव — नहीं—नहीं—नहीं ।।

(चारो उसे रस्सी खींच कर गिरा देते हैं और उस पर कोड़े बरसाते हैं और हँसते रहते हैं ।)

मानव दर्द से चीखता है । चारो जगली व्यक्ति "हो—हो" करके चारो ओर नाचते रहते हैं । कर्नल मानव के सिर के बाल पकड़ कर उसका चेहरा ऊपर उठाता है । चारो उसके चेहरे के पास आते हैं ।)

चारों — हम तुझे एक बार फिर कहते हैं मानव, तू अपना परिश्रम और पसीना हमको दे दे ।

मानव — नहीं——कभी नहीं दूगा ।

(चारो फिर उस पर कोड़े बरसाते हैं । फिर कर्नल चाकू निकाल कर मानव के चेहरे को बाल पकड़ कर ऊपर उठाता है और उसे चाकू दिखाता है । चारो फिर पूछते हैं।)

चारों — यह हमारी आखिरी चेतावनी है मानव । तू अपना परिश्रम और पसीना हमको दे दे ।

(मानव के चेहरे से खून टपकता है । वह धीमी आवाज़ मे बुदबुदाता है । फिर उसकी धीमी आवाज़ सुनाई देती है ।)

मानव — मैं—— मैं—— मैं—— तैयार हूँ ।

(चारो 'हे—हे—हे' कह कर चीखते हैं ।)

मानव — लेकिन मैं एक बात जानना चाहता हूँ ।

चारो — वह क्या ?

मानव — तुम लोग पहले यह तो तय कर लो कि मेरे परिश्रम और पसीने पर अधिकार किसका होगा ?

कुबेर — मेरा होगा । क्योंकि मेरे पास अथाह दौलत है । हथियारो के कारखाने हैं ।

कुटिल — नहीं ! यह सारी योजना मेरी थी इसलिये अधिकार मेरा होगा ।

कर्नल — इस पर अधिकार तुम दोनो का नहीं होगा । इस पर अधिकार उसका होगा जिसके हाथो मे ताकत होगी । मेरे हाथो मे ताक़त भी है और मुट्ठी मे युद्ध। इसलिये इस पर मेरा अधिकार होगा ।

मदिरा — तुम सब मेरे दास हो और दास कभी स्वामी नहीं होते । इसलिये इस पर अधिकार मेरा होगा ।

कुबेर — नहीं, मेरा होगा ।

कुटिल — कहा न, मेरा होगा ।

कर्नल — मेरे हाथो मे ताक़त है और मुट्ठी मे युद्ध इसलिये

मदिरा — इस पर अधिकार मेरा होगा ।

(चारो झगड़ते हैं । हाथापाई होती है ।)

कुबेर — हथियार !

कुटिल — चाल !

मदिरा — षडयन्त्र !

कर्नल — युद्ध !

(युद्ध का ध्वनि प्रभाव उभरता है । मच पर भाग-दौड होती है । चीख पुकार उभरती है । साइक पर भी

भाग-दौड़ उभरती है । प्रकाश इसी के अनुरूप बदलता रहता है । मच के दोनो ओर से धुआँ उठता है । थोडी देर के बाद सब कुछ शान्त होता है । केवल धुँआ उठता रहता है । मच पर लाशे बिखरी रहती हैं । इन्हीं लाशो के बीच से मानव खून से लथपथ उठता है । उसके हाथ और पाव मुडे हुये हैं । मुह टेढ़ा हो गया है। वह उठ कर धीरे धीरे चलता हुआ साइक के पास पहुँचता है । साइक पर प्रश्न-चिन्ह उभरता है । उसकी ओर देख कर मानव दर्शको की ओर देखता रहता है।)

(पर्दा गिरता है ।)

– रोशनी और रक्तबीज –

पात्र —

1 रक्तबीज
2 जगत
3 जमाल
4 सेठ
5 व्यक्ति
6 दलदली
7 अम्मी
8 पिता
व
चार अन्य

(मच पर स्वप्निल प्रकाश फैला हुआ है । पात्रो का चेहरा स्पष्ट नज़र नहीं आता । चार युवक मच पर इस तरह अलग-अलग स्थानो पर भटक रहे हैं, मानो उन्हे किसी की तलाश हो और कुछ दिखाई नहीं दे रहा हो । तभी मच पर बिजली चमकती है ।)

युवक एक — रोशनी !

युवक दो — हाँ रोशनी !

युवक तीन — मैंने भी देखी है ।

युवक चार — कहा है ?

चारों युवक — रोशनी ।

(फिर इधर-उधर देखते हैं । तभी काले कपडे पहने एक व्यक्ति प्रवेश करता है । उसके पीछे एक अर्दली है।)

रक्तबीज — (चौककर) रोशनी ? कहाँ से आयी रोशनी ?

अर्दली — पता नहीं हुज़ूर ! मैंने तो आपके हुक्म के मुताबिक सूरज के आगे छतरी लगा दी थी ।

रक्तबीज — हूँ । तो फिर यह इनका भ्रम है ।

चारो युवक — रोशनी !

रक्तबीज — ख़ामोश !

एक युवक — कहाँ है रोशनी ?

रक्तबीज — वह मेरी कोठी मे क़ैद है ।

(विस्फोट की आवाज़)

दूसरा युवक — यह आवाज़ ?

रक्तबीज — विस्फोट की ।

(एक चीख उभरती है ।)

तीसरा युवक — यह चीख ?

रक्तबीज — हत्या की ।)

(शोर उभरता है ।)

चौथा युवक — यह शोर ?

रक्तबीज — असन्तोष का ।

चारो युवक — विस्फोट— हत्या— असतोष

(रक्तबीज अट्टहास करता है ।)

चारो युवक — विस्फोट–हत्या– असतोष– अट्टहास ।
एक युवक — मेरा दम घुट रहा है ।
दूसरा युवक — रात अधेरी है ।
तीसरा युवक — मुझे दूर जाना है ।
चारो युवक — रोशनी ?
रक्तबीज — क़ैद है ।
एक युवक — हवा ?
रक्तबीज — बोझिल है ।
दूसरा युवक — हम भटक रहे हैं । गिर रहे हैं ।
तीसरा युवक — हमको सहारा दो ।
रक्तबीज — लो ।
चारो युवक — यह किसका सहारा है ?
रक्तबीज — हिंसा का ।
चारों युवक — हिंसा— हिंसा— हिंसा— नहीं ।
रक्तबीज — तो फिर भटकते रहो । अभावो मे जीते रहो । बोझिल हवा मे सास लेते रहो । आदर्शों को पढ़ते रहो ।
एक युवक — आदर्श ?
दूसरा युवक — सोटी और लंगोटी ।
तीसरा युवक — तीन बन्दर ।
चौथा युवक — बुरा मत कहो ।
एक युवक — बुरा मत सुनो ।
दूसरा युवक — बुरा मत देखो ।
रक्तबीज — नहीं । जो अच्छा काम करते हैं, उन्हे बुरा कहो । जिन्होने रोशनी को क़ैद किया है उन्हे सुनो । जिन्होंने हवा को बोझिल बनाया है उन्हे देखो ।
चारो युवक — तुम ?
रक्तबीज — हाँ मैं । मुझे देखो मुझे सुनो । मैं तुम्हारे लिये रोशनी लाऊँगा ।
एक युवक — हिंसा से ।
रक्तबीज — मैं हवा को हल्का बनाऊँगा ।
दूसरा युवक — हथियार से ।

रक्तबीज — मैं तुम्हे रास्ता दिखाऊँगा ।

तीसरा युवक — रक्तभरा ।

रक्तबीज — तो तुम मुझे नहीं स्वीकारते ।

चारो युवक — नहीं ।

रक्तबीज — मैं तुम्हे विवश कर दूँगा ।

चारो युवक — हम तुम्हारी हत्या कर देगे ।

रक्तबीज — इसका अर्थ है तुम मुझे ही दोहराओगे । मैं फिर भी नहीं मरूँगा ।

चारो युवक — तुम अमर नहीं हो ।

रक्तबीज — मैं रक्तबीज हूँ । तुम्हारी हर राह मे मेरे बीज बिखरे पडे हैं। तुम उनसे अपना दामन नहीं बचा सकते ।

एक युवक — तुम्हारे बीज ?

रक्तबीज — हाँ । कहीं हत्या के, कहीं भ्रष्टाचार के, कहीं असतोष के । आओ मेरे पास आओ । मैं तुम्हे नया जीवन दूँगा। एक स्वतत्र जीवन । लो, उठाओ हथियार ।

चारो युवक — नहीं ।

रक्तबीज — मैं कहता हूँ, उठाओ हथियार ।

चारो युवक — नहीं ।

रक्तबीज — उठाओ ।

चारो युवक — (चीख-कर) नहीं ।।

(क्षीण प्रकाश लुप्त होता है और मच के दाहिनी ओर उभरता है । एक तख्त पर जगत लेटा हुआ ज़ोर से चीखता है ''नहीं'' 'तभी जमाल प्रवेश करता है ।)

जमाल — जगत— जगत— क्या हुआ ? क्या नही ?

जगत — जमाल— जमाल— फिर वही साया, वही स्वप्न वही छाया ।

जमाल — वही— जो हमको बार-बार झकझोरती है ?

जगत — हाँ वही, जो न चैन से रहने देती है और न सोने देती है।

जमाल — मुझे लगता है जगत, इसका शिकजा हमारे चारो तरफ कसता जा रहा है ।

जगत — समझ मे नहीं आता हम क्या करे ? जमाल कभी-कभी लगता है, यह अजगर हमको लील जायेगा ।

जमाल — ऐसा मत कहो जगत । जब तुम इस तरह की बात करते हो तो मेरी हिम्मत जवाब दे जाती है ।

जगत — क्या सोचा था हमने गाँव से चलते समय ?

जमाल — सोचा था शहर जाकर एक अच्छी-सी नौकरी करेगे । तरक्की करेगे ।

जगत — लेकिन यहा आकर क्या मिला ? बेकारो की लम्बी सूची मे हमारा नाम और जुड गया ।

जमाल — जगत, कही यह साया इसलिये तो हमको परेशान नहीं कर रहा, कि हम बेकार हैं ?

जगत — क्या मालूम ? लेकिन अगर यह बात सत्य भी हो तो कौन दे रहा है हमको नौकरी ?

जमाल — हाँ, कहाँ है हमारी रोज़ी-रोटी का साधन ? कई बार जी करता है जला दूँ इन सारी डिगरियो को।क्या अर्थ है इनका?

जगत — नहीं जमाल ऐसे नहीं सोचते । हो सकता है, कमज़ोरी हमारे भीतर ही कही हो ।

जमाल — हम कहीं कमज़ोर हैं इसीलिये तो यह अजगर हमारी तरफ बढ़ रहा है ।

जगत — आज मुझे अपने पिताजी के शब्द याद आ रहे हैं । जानते हो, गाव से चलते समय उन्होने क्या कहा था ?

(मच के मध्य प्रकाश उभरता है । एक बुजुर्ग व्यक्ति वहाँ कुछ सोचने की मुद्रा मे खड़ा है । फिर कहता है।)

पिताजी — (पजाबी लहजे मे) तुसी जाना चाहते हो तो जाओ । मैं तुम्हे नहीं रोकूगा । शहर जाकर तरक्की करना चाहते हो। करो । मगर पुत्तर इतना ध्यान रखना, बड़े शहरो की सड़के आदमी को निगल जाती हैं । अगर कभी तुम्हे लगे कि पसीना बहाने के बावजूद भी तुम फौलाद नहीं बन पा रहे हो और पिघल रहे हो, तो फिर अपने गाव वापस आ जाना । तरक्की शहरो मे ही नहीं, गाँवो मे भी होती है । अगर तुम पिघल कर भी लौटोगे तो तुम्हारे खेत तुम्हे फिर से फौलाद बना देगे ।

(मच के मध्य से प्रकाश लुप्त होकर पुन जगत व जमाल पर उभरता है ।)

जमाल — हूँ । इसका अर्थ कहीं यह तो नहीं कि हम पिघल रहे है?

जगत — नहीं जमाल । हमको पिघलना नहीं है । न यह सडके हमको निगल सकती हैं और न यह अजगर हमको लील सकता है। हमको और कोशिश करनी है ।

जमाल — हमारी हिम्मत ही इस समय हमारा सबसे बडा सहारा है । चलो जगत एक बार फिर अपने पाँवो की ताक़त आज़माते हैं ।

(प्रकाश लुप्त होता है । सगीत उभरता है । जब पुन प्रकाश उभरता है, तो तीन व्यक्ति थोड़ी दूरी पर अलग-अलग स्थानो पर खड़े दिखाई देते है । जगत और जमाल दौडने का अभिनय करते हुये पहले व्यक्ति के सामने दौड़ते हुए कहते हैं ।)

जगत–जमाल — डिग्री है । मेहनत है । ईमानदारी है । नौकरी चाहिये ।

तीनो व्यक्ति — सिफारिश है ? रिश्वत है ?

जगत–जमाल — नहीं ।

(पहला व्यक्ति मुँह फेरकर खड़ा हो जाता है । जगत और जमाल दौडते हुये दूसरे व्यक्ति के सामने पहुँचते हैं।)

जगत–जमाल — डिग्री है । मेहनत है । ईमानदारी है । नौकरी चाहिये।

तीनों व्यक्ति — किसके बेटे हो ? किसके भाई हो ? किसके भतीजे हो? किसी से कहलवा सकते हो ?

जगत–जमाल — नहीं

(दूसरा व्यक्ति भी मुँह फेरकर खड़ा हो जाता है । जगत और जमाल तीसरे व्यक्ति के सामने जाते हैं ।

जगत–जमाल — डिग्री है। मेहनत है। ईमानदारी है । नौकरी चाहिये ।

तीसरा व्यक्ति — रक्षित रक्षित रक्षित हो ?

जगत–जमाल नहीं ।

(तीसरा व्यक्ति भी मुँह फेरकर खड़ा हो जाता है । कुछ समय तक जगत और जमाल दौडते हुये इन तीनो

व्यक्तियो के चक्कर काटते हैं । सभी सवाद यथावत चलते रहते है । कुछ क्षणो पश्चात् तीनो व्यक्ति अपने सवाद बोलते हुये चले जाते हैं।)

(मच के बायीं ओर प्रकाश उभरता है, जहाँ रक्तबीज अट्टहास कर रहा है । रक्तबीज को देखकर जगत और जमाल ठहर जाते हैं ।)

जगत — वही रक्तबीज का अट्टहास ।

जमाल — वही क्रूरता । वही चुनौती ।

रक्तबीज — क्या ? ठहर क्यो गये ? क्या पाँवो की ताक़त ने जवाब दे दिया ?

(जगत जमाल खामोश रहते हैं ।)

रक्तबीज — मैं नहीं कहता था ? तुम्हारी हर राह मे मेरे बीज बिखरे पडे हैं । तुम्हारे सामन सिर्फ एक ही रास्ता शेष है । मेरे पास आन का ।

जमाल — यह तुम्हारा भ्रम हे ।

जमाल — ऐसा कभी नहीं होगा ।

रक्तबीज — हूँ । इसका अर्थ है कि अभी शक्ति शेष है । जाओ और आजमाओ । मुझ तो तुम्हारे जेमे नौजवानो की हमेशा तलाश रहती है । जब चाहो मेरे पास चले आना । मैं तुम्हे वह सब कुछ दूगा, जिसकी इस उम्र मे तुम्हे आवश्यकता है।

(हँसता हुआ चला जाता है ।)

जगत — लगता है, यह आसानी से हमारा पीछा नही छोड़ेगा ।

जमाल — लेकिन हमारे न चाहते हुय भी इसका चेहरा हमारे सामने उभर क्यो आता है ?

जगत — शायद हमारी परेशानिया ने हमारे दिमाग के किसी कोने मे इसे बिठा दिया है ।

जमाल — जानते हो, मेरी अम्मी बचपन म क्या कहा करती थी ?

(मच के मध्य प्रकाश उभरता है और एक औरत पर केन्द्रित हो जाता है ।)

अम्मी — बेटे, शैतान दिमाग मे घर बहुत जल्दी बना लेता है । अगर कभी एसा हो तो अपने दिमाग की हर खिड़की खुली

रखना, ताकि ताज़ी हवा और रोशनी हर तरफ़ से तुम्हारे दिमाग़ मे आ सके। जहाँ रोशनी और ताज़ी हवा होती है, शैतान वहाँ नहीं टिकता है। खुदा को सदा याद रखना। उसकी इबादत करना और उसके सज़दे मे सिर झुकाकर गुज़ारिश करना कि ए परवर दिगार ! मुझे रोशनी अता कर ताकि मैं इस शैतान को दूर भगा सकूँ।

(प्रकाश मच के मध्य से लुप्त होकर जगत और जमाल पर उभरता है।)

जगत — तुम्हारी अम्मी ठीक ही कहती थी। हमको अपने दिमाग़ की हर खिड़की को खुला रखना चाहिये।

जमाल — ओर उसके सज़दे मे सिर झुकाकर उसकी इबादत करनी चाहिये।

(जगत हाथ जोड़कर खड़ा होता है और जमाल नमाज़ पढ़ने की मुद्रा मे बैठ जाता है। पीछे से अज़ान का स्वर उभरता है और उसके पश्चात् गुरुवाणी के स्वर उभरते हैं। प्रकाश धीरे-धीरे लुप्त होता है।)

(प्रकाश पुन फैलता है। एक व्यक्ति ताश का खेल दिखाने का अभिनय कर रहा है।)

व्यक्ति — आइये—आइये—ग़ौर से देखिये। यह कोई हाथ की सफाई नहीं है ओर न जुआ का खेल। ग़ौर से देखिये देखिये, जवानो मेरे दोनो हाथ खाली हैं।

(जगत और जमाल आकर खड़े होते हैं।

व्यक्ति — अच्छी तरह देख लीजिये। यह बच्चो और बूढ़ो का खेल नहीं है। इसलिये बच्चे और बूढ़े चले जाए और जवानो को आगे आने दे।
आइये-आइये हाँ तो मैं कह रहा था, मेरे दोनो हाथ खाली हैं। अब मैं एक हाथ मे यह आग उगलने वाला खिलौना लेता हूँ। ध्यान रहे, यह जादू का खिलौना है। यह वह खिलौना है जो आपको मनचाही वस्तु देगा। देखिये, मेरे एक हाथ मे खिलौना है और दूसरा हाथ

है । देखिये, खिलौने के आते ही मेरे दूसरे हाथ मे क्या आ गये हैं ?

जगत — अरे, ढेर सारे नोट ?

जमाल — यह कैसे आ गये ?

व्यक्ति — यह सब इस खिलोने का कमाल है । आप भी इसे आज़माइये । यह आपको सब कुछ देगा ।

जगत — तुम्हारा खिलौना हमको कोई काम दिला सकता है ?

व्यक्ति — काम ?

जमाल — हाँ, कोई नौकरी ?

व्यक्ति — आप एक बार यह खिलौना हाथ मे तो लीजिये । दुनियाँ आपकी नौकर होगी ।

जगत — हमको अलादीन का चिराग नहीं चाहिये ।

जमाल — हमको केवल काम चाहिये ।

व्यक्ति — यह काम तो इतने दिला देगा कि आप लोगो के लिये चुनाव करना भी मुश्किल हो जायेगा ।

जगत — सच कह रहे हो ?

व्यक्ति — हाँ । बिलकुल सच । तुम्हे काम चाहिये न ?

जगत–जमाल — हाँ ।

व्यक्ति — कितनी ज़रूरत है काम की ?

जगत — ज़िन्दा रहने के लिये जितनी साँस की ।

व्यक्ति — तब ठीक है । आओ मेरे साथ ।

जमाल — कहाँ ?

व्यक्ति — काम के गोदाम मे । आ जाओ मेरे पीछे-पीछे ।

(जगत और जमाल व्यक्ति के पीछे चले जाते हैं । सगीत उभरता है और प्रकाश लुप्त होता है ।)

(प्रकाश पुन उभरता है ।)

(कुछ लोग बैठे हुये चीज़ो मे मिलावट करने का अभिनय कर रहे हैं । सेठजी पास ही खड़े प्रसन्न हो रहे हैं।)

सेठजी — शाबास— शाबास— ज़रा और जल्दी-जल्दी हाथ चलाओ–अरे, तम्हारे हाथ क्यो काँप रहे हैं ? कौन-सा ईमानदारी का काम कर रहे हो जो डर रहे हो ।

(मिलावट करने की गति तेज हो जाती है।)

सेठजी — शाबास शाबास तुम ।
एक — आटे मे घीया भाटा ।
सेठ — तुम ?
दो — मसाले मे लीद ।
सेठजी — तुम ?
तीन — काली मिर्च मे पपीते के बीज ।
सेठजी — तुम ?
चार — दूध मे पानी ।
सेठजी — मिलाओ–मिलाओ खूब मिलाओ ऐसे ही तो हमारा राज जल्दी आयेगा ।

(व्यक्ति प्रवेश करता है।)

व्यक्ति — सेठजी— वह दोनो आ गये है ।
सेठजी — आ गये हैं, तो अन्दर भेज दो ।

(जगत व जमाल का प्रवेश)

जगत–जमाल — नमस्ते सेठजी ।
सेठजी — नमस्ते–नमस्ते, हाँ तो तुम ?
जगत-जमाल — बेकार हैं ।
सेठजी — हैं ? बेकार हो ? अरे आजकल इतने धन्धे हमने चला रक्खे हैं कि हमको आदमी नहीं मिलते और तुम बेकार हो?
जगत — जी कौन–कौन से ?
सेठजी — अरे बताना रे इन्हे ।
एक — दगा ।
दो — मिलावट ।
तीन — हत्या ।
चार — आगजनी ।
सेठ — और तरस्करी बोलो कौन-सा धन्धा पसन्द है ?
जमाल — कोई नहीं ।
सठजी — क्यो ?
जगत — इससे देश की समस्याएँ हल नहीं होगी ।

सेठजी — अरे, हम भी तो देश की सबसे बड़ी समस्या हल कर रहे हैं।

जमाल — कोनसी ?

सेठजी — बढ़ती हुई जनसख्या की । हम जनसख्या कम कर रहे हैं। अगर जनसख्या कम हो गई, तो देश की सारी समस्याएँ अपने आप हल हो जायेगी । क्या समझे ?

जगत — जी यह सब हमारी समझ से परे है ।

सेठजी — एक बार मेरे साथ काम करना शुरू कर दो । सब अपने-आप समझ मे आ जायेगा । सोच लो सोच लो इतनी देर मे मैं एक और काम कर लूँ । अरे, दलदली, यहा आना ।

दलदली — आया सेठजी जी ?

सेठजी — कल कितनी नींव खोदी थी ?

दलदली — जी इतनी ।

सेठजी — तो चलो, आज थोड़ी और खोद दे ।

(दोनो खोदने जैसा अभिनय करते हैं ।)

(जगत जमाल आश्चर्य से देखते रहते हैं ।)

सेठजी — बस दलदली । आज इतनी ही काफी है जा दूसरा काम कर ।

जगत — सेठजी—आप और दलदली यह क्या कर रहे थे ?

सेठजी — नींव खोखली कर रहे थे ।

जमाल — किसकी ?

सेठजी — अरे सरकार की और किसकी ?

जगत — क्यो ?

सेठजी — सरकार को उखाड़ना जो है ।

जमाल — किसलिये ?

सेठ — ताकि अपना राज आये और अपना धन्धा और आगे बढ़े ।

जगत — वह दिन कभी नहीं आयेगा ।

सेठ — आयेगा-आयेगा जल्दी ही आयेगा बस थोड़ा खोदना और बाकी है क्यो दलदली ?

दलदली — हा सेठजी और अपना राज चुपचाप नहीं
ढोल -ढमक्के से आयेगा ।

सेठ व — हाँ अब आयेगा अपना राज ढोल—ढमक्के से ।
कारिन्दे — मिल जायेगे सब सुख-साज ढोल--ढमक्के से ।
(सब झूम कर गाते है ।)

सेठ — देखा, कितना मज़ा आया ? जब इस कल्पना मे ही इतना मज़ा है तो इसके साकार होने के बाद कितना मज़ा आयेगा।

दलदली — याद मत दिलाइये सेठजी मैं बेहोश हो जाऊगा ।

सेठ — हाँ, तो तुम लोगो ने क्या तय किया ?

जगत — जी हम कुछ तय नहीं कर पाये हैं ।

जमाल — आपके करतब देखकर तो लगता है कि आपका राज अब जल्दी ही आने वाला है ।

सेठ — इसीलिये तो कहता हूँ हमारे साथ मिलकर धन्धा करो

जगत — धन्धा ?

जमाल — कौनसा धन्धा ?

सेठ — काला बाज़ारी तस्करी ।

जगत — तस्करी ?

जमाल — यह क्या होता है ?

सेठ — मैं सब तुम्हे बता दूगा तुम तो हम से हाथ मिला लो । मिलाओ अरे, झिझक क्यो रहे हो ? मिला लो ।
(सेठ जबरदस्ती दोनो से हाथ मिलाता है ।)

सेठ — हाँ यह हुई न मर्दों वाली बात । अरे दलदली देख क्या रहे हो ? नये मेहमानो को हमजोली बनाओ ।
(एक कारिन्दा ट्रे मे गिलास और शराब लाता है । सब मिलकर जगत और जमाल को ज़बरदस्ती शराब पिलाते हैं। प्रकाश मन्द पड़ता है । सगीत उभरता है । कुछ क्षणो के पश्चात् प्रकाश पुन फैल जाता है । सब लोग जगत–जमाल को घेरकर खडे हैं ।)

जगत–जमाल — हम कहा है ? (नशे मे दोनो लडखडाते हैं ।)

दलदली — हमारी गिरफ़्त मे (गम्भीर स्वर मे)
जगत — क्या करो के लिये ?
सेठ — दगा !
दलदली — आगज़नी !
सेठ — हत्या !
दलदली — और तस्करी के लिये।
जगत — हमे ?
सेठ — सरकार का तख़्ता उलटना है।
जमाल — और ?
दलदली — कालाबाज़ारी करनी है।
जगत — और ?
सेठ — लोगो को भडकाना है। आतक फैलाना है।
जमाल — हम सब कर दगे, पहले घर जाकर थोडा सो ले।
दलदली — नहीं, अगर हम सो गये तो इन्सानियत जाग जायेगी
सेठ — हमे अराजकता का ताण्डव करते रहना है।
दलदली — जाओ।
जगत — कहाँ ?
सेठ — समुद्र के किनारे।
जमाल — क्यो ?
दलदली — वहाँ लक्ष्मी है।
सेठ — उसे इस सूटकेस मे क़ैद करके लाना है।
जगत — क़ैद करना है तो हथकड़ी दो। सूटकेस क्यो दे रहे हं
दलदली — बको मत। जैसा हम कहते हैं, वैसा करो।
जमाल — अच्छा फिर क्या करना है ?
सेठ — फिर पैसा बनाना है।
जगत — फिर ?
दलदली — करो की चोरी करनी है।
जमाल — फिर ?
सेठ — चुनाव लड़ना है।
जमाल — फिर ?
दलदली — फिर सिंहासन पर बैठना है।

जगत — अरे सुन रहा है न ?

जमाल — सु। रहा हूँ।

जगत — इस मुर्गी ने तो सोने का अण्डा बहुत जल्दी दे दिया।

जमाल — तो क्यो न इसको खत्म करके सारे अण्डे एक साथ ही निकाल ले।

दलदली — क्या बकते हो ?

जगत — कुछ नहीं— कुछ नहीं— ।

सेठ — खबरदार— अब आगे से हमसे पूछे बगैर ज़ुबान नहीं खोलोगे।

दलदली — शब्द हमारे होगे ज़ुबा। तुम्हारी।

सेठ — आदेश हमारे हागे।

दलदली — पालन तुम्हारा समझे ?

जगत — समझ गये।

सेठ — तो लो— ।

जमाल — ये क्या है ?

सेठ — सूटकेस तस्करी के लिये।

दलदली — ये हथियार हिंसा के लिये

सेठ — ये नकली बहीखाते करो की चोरी के लिये।

दलदली — यह माचिस आगज़नी के लिये।

सेठ — और यह मटका।

जगत — इस मटके मे क्या है ?

दलदली — कीचड़।

जमाल — यह किसलिये ?

सेठ — सरकार पर उछालने के लिये।

जगत — समझ गये। समझ गये।

दलदली — आज से हम तुम्हारा नया नाम रखते हैं। तुम हो तस्कर सम्राट्। और तुम हो कर-चोर, मिस्टर किग।

जमाल — तो चले ?

दलदली — हा जाओ, जनता का विश्वास तुम्हारे साथ है।

जगत — चलो किग।

जमाल — चलो सम्राट्।

(जगत और जमाल कुछ क़दम चलने के पश्चात् गिर जाते हैं । सभी लोग हँसते हैं ।)

जगत — अरे, हम लोग गिर रहे है ।

जमाल — और तुम हस रहे हो ?

जगत — यहा आओ । हमको उठाओ ।

दलदली — नहीं । हम तुम्हारे पास नहीं आ सकते ।

सेठ — हम सिर्फ दूर से तुम्हे सहारा देते रहेगे ।

दलदली — आगे का सफर तुम्हे स्वय तय करना है ।

(सभी व्यक्ति "आगे का सफर तुम्हे स्वय तय करना हे" कहते हुये स्टेज से बाहर आ जाते हैं । प्रकाश जगत जमाल पर केन्द्रित रहता है ।)

जगत — अजीब लोग हैं ।

जमाल — हाँ देखो न, इतना बोझ हमारे कधो पर लाद दिया ।

जगत — और फिर कहते हैं यह सफर तुम्ह ही तय करना है ।

जमाल — इन्होने हमको कमज़ोर समझ लिया है ।

जगत — यह समझते हैं कि हम गिर गये हैं तो अब उठ नहीं सकते।

जमाल — हम उठ सकते हैं । सुन रहे हो तुम लोग । हम उठ सकते हैं । मत दो हमको सहारा । हम ख़ुद उठ जायेगे। चल उठ जमाल ।

(दोनो उठने की कोशिश करते हैं किन्तु फिर गिर जाते हैं।)

जगत — अरे कोई है ? इधर आओ ।

जमाल — हमको उठाओ ।

(प्रकाश मन्द पड़ता है । रक्तबीज का अट्टहास उभरता है।)

जगत — वही रक्तबीज का अट्टहास ।

जमाल — वही क्रूरता—वही चुनौती ।

जगत — जमाल ! हमको लील गया रे यह अजगर ।

जमाल — ए इधर आओ हमको सहारा दो ।

(रक्तबीज का प्रवेश)

रक्तबीज — मैं तो बहुत पहले से कह रहा हूँ तुम्हे केवल मेरे सहारे की ज़रूरत है । उठो ।

(रक्तबीज जगत और जमाल को उठाता है ।)

रक्तबीज — जाओ, अब आगे बढ़ो ।

जगत–जमाल — कहा ?

रक्तबीज — उसी रास्ते पर जो तुम्हे दिखाया जा चुका है ।

जगत — हाँ हाँ हाँ सिंहासन का रास्ता

जमाल — सिंहासन का रास्ता और सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी। चलो जगत ।

जगत — चलो जमाल ।

(रक्तबीज अट्टहास करता हुआ चला जाता है ।)
(दोनो गाते हैं ।)

जगत — मैं तस्कर सम्राट हूँ ।

जमाल — और मैं हूँ मिस्टर किंग ।

(कुछ कदम चलने के पश्चात् दोनो फिर गिर जाते हैं।)

जमाल — जगत हम तो फिर गिर गये ।

जगत — तो फिर दो आवाज़ । कोई न कोई हमको फिर उठाएगा ।

जमाल — अरे कोई है ? हमको उठाओ ।

जगत — है कोई ? हम गिर गये हैं । उठाओ हमको ।

जमाल — कोई है ? गिर गये हैं हम ।

(प्रकाश की किरण उभर कर माइक पर स्थिर हो जाती है और सिर्फ आवाज़ आती है ।)

आवाज़ — हाँ, तुम गिर गये हो । वैसे भी जिस रास्ते पर तुम जा रहे हो वहाँ गिरने के, और है ही क्या ?

जगत — ऐ अदब से बात करो हम सम्राट हैं ।

जमाल — और हम मिस्टर किंग । उठाओ हमको ।

आवाज़ — उठो ।

(जगत और जमाल इस तरह उठते हैं जैसे उन्हें कोई सहारा देकर उठा रहा हो ।)

जगत — थैंक्यू धन्यवाद लेकिन तुम हो कहाँ ?

जमाल — हाँ, यहाँ तो कोई नहीं फिर किसने हमको उठाया

जगत — जमाल हम नशे मे हैं क्या ?

जमाल — नहीं बिलकुल नहीं ।

जगत — तो फिर किसने सहारा दिया हमको ?

जमाल — हो सकता है, हम गिरे ही न हो ।

जगत — हाँ । क्या पता यह हमारा अहसास ही हो ।

जमाल — हाँ–हाँ–हाँ हम गिरे ही नहीं थे । हम तो खडे है ।

जगत — तो फिर चलो । आगे चले आगे सिहासन है ।

जमाल — सिंहासन ।

जगत — चलो । मैं तस्कर सम्राट हूँ ।

जमाल — मैं हूँ मिस्टर किग ।

(जगत और जमाल आगे बढ़ते हैं, तभी आवाज़ फिर आती है ।)

आवाज़ — ठहरो ! आगे मत बढ़ो ।

जगत–जमाल — क्यो ?

आवाज़ — क्योकि यह रास्ता रसातल को जाता है ।

जगत — चुप । हमको मालूम है यह रास्ता सिहासन का रास्ता है।

आवाज़ — यह रास्ता नहीं भटकनो का बीहड है ।

जमाल — तो ?

आवाज़ — अगर इसमे भटक गये तो लौट नहीं पाओगे ।

जगत — हम भी तो उन अभावो मे लौटना नहीं चाहते है । चलो जमाल ।

जमाल — चलो जगत ।

आवाज़ — नहीं । मैं तुम्हे नहीं भटकने दूँगी । नहीं जाने दूँगी ।

(जगत और जमाल इस तरह का अभिनय करते हैं जैसे उन्हे किसी ने जकड लिया हो ।)

जगत — अरे छोड़ो छोड़ो हमको ।

जमाल — लेकिन लेकिन किसने जकड़ा है हमको ? यहाँ तो कोई नहीं ।

जगत — हाँ हाँ कोई नहीं है यहाँ । कहाँ हो तुम ?

आवाज़ — तुम मुझे बाहर तलाश कर रहे हो, जबकि मैं तुम्हारे भीतर हूँ ।

जगत — भीतर ? कौन हो तुम ?

आवाज़ — तुम्हारी चेतना ।

जमाल – हाँ— तुम ठीक कहते हो। पाँवो की ताक़त तो हमने खूब आज़माली। अब थोडी हाथो की ताकत भी आज़माले।

जगत – ठीक है। आज से हम दिशा बदल देते हैं। चलो।

जमाल – ठहरो जगत। मेरी अम्मी कहा करती थीं, "खिडकिया खुली रखने से ताज़ी हवा आती है। रोशनी आती है, और रोशनी आने से अच्छे खयाल आते हैं। जब भी तुम्हारे ज़हन मे अच्छे खयाल आऐ तो खुदा को मत भूलना। उसके सज़दे मे सिर झुकाकर उसका शुक्रिया ज़रूर अदा करना।

जगत – तो आओ, हम अच्छे विचारो के लिये पहले उसका शुक्रिया अदा कर दे।

(जगत हाथ जोडकर खडा होता है और जमाल नमाज़ पढ़ने की मुद्रा मे बैठता है। अज़ान का स्वर उभरता है और उसके पश्चात् कीर्तन के स्वर उभरते हैं। कीर्तन के स्वर ज्योही धीमे होते हैं तो समाचार-वाचक के स्वर उभरते हैं।)

समाचार वाचक – एक विज्ञप्ति मे कहा गया है कि सरकार ऋण देने के लिये एक बडी राशि उपलब्ध कराएगी। इस राशि का सम्पूर्ण उपयोग बेरोज़गार युवको को अपना स्वय का कारोबार शुरु करने के लिये किया जायेगा। युवको से अपील की गई है कि वे इस योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाएँ और

(वाचक का स्वर सगीत मे विलीन हो जाता है। सगीत पर ही कारखाने की ध्वनि उभरती है। यह ध्वनि कुछ क्षणो तक चलती रहती है। प्रकाश पुन उभरकर मच के मध्य एक बोर्ड पर केन्द्रित हो जाता है। बोर्ड पर लिखा है "जगत जमाल इन्डस्ट्रीज"। जगत और जमाल प्रवेश करते हैं।)

जगत – अब हम बेकार नहीं हैं।

जमाल – लोन लेकर हमने अपना कारखाना लगाया है।

जगत – यह खूब पनप रहा है।

जमाल — अल्लाह ताला का शुक्र है।
जगत — भटकाव के बीहड़ से अब हम बाहर हैं।
जमाल — रक्तबीज का खौफ़ भी अब नहीं रहा।
जगत — हाँ, रह—रहकर उसके कराहने की आवाज़े कभी-कभी अवश्य सुनाई पड़ती हैं।
जमाल — जिन्दगी का एक तजुर्बा हासिल हुआ है हमको।
जगत — जो अच्छा काम करते हैं, ईश्वर उसका फल अवश्य देता है।
जमाल — और जो बुरा काम करते हैं खुदा उन्हे कभी माफ नहीं करता।

(मंच के बायीं ओर से सेठ दलदली व अन्य मिलावट करने वाले एक रस्सी से बंधे प्रवेश करते हैं। उनके आगे एक सवारी है।)

जगत — हाथ कंगन को आरसी क्या, यह देखिये।
सेठ — (रोते हुये) आटे में ?
एक साथी — पीसा भाटा।
सेठ — काली मिर्च में ?
दूसरा साथी — पपीते के बीज।
सेठ — मसाले में ?
तीसरा साथी — लीद।
सेठ — दूध में ?
चौथा साथी — पानी।
सेठ — [illegible] न मिलाते ?
एक साथी — तो ये हाल नहीं होता।
सेठ — दाम ?
[illegible] — नहीं बढ़ाते।
सेठ — [illegible] ?
[illegible] — नहीं करते।
सेठ — रीयत ?
[illegible] — नहीं [illegible]।
सेठ — तो ?
जगत जमाल — जेल में नहीं आते।

दलदली — अरे जा कौन रहा है ? हम तो बाइज्जत ले जाये जा रहे हैं।

जगत — अच्छा एक बात बताइये ।

सेठ — पूछिये ।

जगत — आपने जितने भी काले कारनामे किये उसका आपको कोई अफसोस नहीं ?

सेठ — यह अफसोस क्या होता है ?

जमाल — मतलब आपकी इन्सानियत ने यह सब कैसे गवारा किया?

दलदली — यह इन्सानियत क्या होती है ?

जगत — मतलब कभी आपने ये भी सोचा कि आप देश को कितना बड़ा नुकसान पहुँचा रहे हैं ।

सेठ — यह देश क्या होता है ?

जमाल — क्या आप लोग अफसोस, इन्सानियत और देश का अर्थ नहीं जानते ?

सेठ व दलदली — नहीं ।

जगत — तो फिर क्या जानते हैं ?

सेठ — आटे में ?

एक व्यक्ति — घीया भाटा ।

सेठ — काली मिर्च में ?

दूसरा व्यक्ति — पपीते के बीज ।

सेठ — मसाले में ?

तीसरा व्यक्ति — लीद ।

सेठ — दूध में ?

चौथा व्यक्ति — पानी ।

जमाल — अच्छा और क्या जानते हैं ?

सेठ — सुनो ।

दलदली — दाम ?

सेठ — बढ़ाने के लिये ।

दलदली — नींव ?

सेठ — खोखली करने के लिये ।

दलदली — कीचड़ ?

सेठ — उछालने के लिये होता है ।

जमाल — अल्लाह ताला' का शुक्र है ।

जगत — भटकाव के बीहड से अब हम बाहर हैं ।

जमाल — रक्तबीज का खौफ भी अब नहीं रहा ।

जगत — हाँ, रह–रहकर उसके कराहने की आवाज़े कभी-कभी अवश्य सुनाई पडती हैं ।

जमाल — ज़िन्दगी का एक तजुर्बा हासिल हुआ है हमको ।

जगत — जो अच्छा काम करते हैं, ईश्वर उसका फल अवश्य देता है।

जमाल — और जो बुरा काम करते हैं खुदा उन्हे कभी माफ नहीं करता ।

(मच के दायीं ओर से सेठ दलदली व अन्य मिलावट करने वाले एक रस्सी से बधे प्रवेश करते हैं । उनके आगे एक सन्तरी है ।)

जगत — हाथ कगन को आरसी क्या, यह देखिये ।

सेठ — (रोते हुये) आटे मे ?

एक व्यक्ति — घीया भाटा ।

सेठ — काली मिर्च मे ?

दूसरा व्यक्ति — पपीते के बीज ।

सेठ — मसाले मे ?

तीसरा व्यक्ति — लीद ।

सेठ — दूध मे ?

चौथा व्यक्ति — पानी ।

सेठ — अगर न मिलाते ?

एक व्यक्ति — तो ये हाल नहीं होता ।

सेठ — दाम ?

दलदली — नहीं बढ़ाते ।

सेठ — नींव खोखली ?

दलदली — नहीं करते ।

सेठ — कीचड़ ?

दलदली — नहीं उछालते ।

सेठ — तो ?

जगत–जमाल — जेल मे नहीं जाते ।

दलदली — अरे जा कौन रहा है ? हम तो बाइज्जत ले जाये जा रहे हैं।

जगत — अच्छा एक बात बताइये ।

सेठ — पूछिये ।

जगत — आपने जितने भी काले कारनामे किये उसका आपको कोई अफसोस नहीं ?

सेठ — यह अफसोस क्या होता है ?

जमाल — मतलब आपकी इनसानियत ने वह सब कैसे गवारा किया?

दलदली — यह इन्सानियत क्या होती है ?

जगत — मतलब कभी आपने ये भी सोचा कि आप देश को कितना बड़ा नुकसान पहुँचा रहे हैं ।

सेठ — यह देश क्या होता है ?

जमाल — क्या आप लोग अफसोस, इन्सानियत और देश का अर्थ नहीं जानते ?

सेठ व दलदली — नहीं ।

जगत — तो फिर क्या जानते हैं ?

सेठ — आटे मे ?

एक व्यक्ति — घीया भाटा ।

सेठ — काली मिर्च मे ?

दूसरा व्यक्ति — पपीते के बीज ।

सेठ — मसाले मे ?

तीसरा व्यक्ति — लीद ।

सेठ — दूध मे ?

चौथा व्यक्ति — पानी ।

जमाल — अच्छा और क्या जानते हैं ?

सेठ — सुनो ।

दलदली — दाम ?

सेठ — बढ़ाने के लिये ।

दलदली — नींव ?

सेठ — खोखली करने के लिये ।

दलदली — कीचड ?

सेठ — उछालने के लिये होता है ।

जगत	—	वाह–वाह ! फिर इसमे एक बात और जोड लीजिये ।
सेठ	—	वह क्या ?
जमाल	—	जेल– – –
जगत	—	आप जैसे लोगो के लिये ही होती है ।
		(जगत जमाल हँसते हैं ।)
सेठ	—	इनकी बात पर ध्यान मत दो–चलो, पुरानी यादे फिर ताज़ा करले–आटे मे ?
एक व्यक्ति	—	घीया भाटा ।
सेठ	—	काली मिर्च मे ?
दूसरा व्यक्ति	—	पपीते के बीज ।
		(कहते हुये मच से बाहर चले जाते हैं ।)
		(रक्तबीज के कराहने का स्वर उभरता है ।)
जमाल	—	यह कराह किसकी ?
जगत	—	रक्तबीज की ।
जमाल	—	क्या उसे भी पीडा होती है ?
जगत	—	हा । जब-जब रोशनी उदय होती है, तब-तब वह इसी तरह कराहता है ।
		(रक्तबीज का प्रवेश)
रक्तबीज	—	(कराहते हुये) यह यह चकाचौंध कैसी ? यह यह क्या है ?
जगत	—	रोशनी ।
रक्तबीज	—	कहाँ है ?
जमाल	—	चारो ओर बिखरी है ।
रक्तबीज	—	यह मेरी कैद से बाहर कैसे आ गयी ?
जगत	—	चेतना के रास्ते से ।
रक्तबीज	—	यह यह मेरी आँखो मे चुभ रही है । मुझे कुछ भी दिखायी नहीं देता । मुझे मुझे सहारा दो ।
जमाल	—	लो ।
		(रघुपति राघव राजा राम की धुन उभरती है।)
रक्तबीज	—	यह यह किसका सहारा है ?
जगत	—	अहिंसा का ।

रक्तबीज — नहीं नहीं ! मैं हिंसा क
रक्त— माँस— हिंसा ! हत्
(जगत और जमाल हँसते हैं !

रक्तबीज — यह अट्टहास— अहिंसा— क
यह— हवा को क्या हुआ ?

जमाल — हवा अब हल्की हो गई है !

रक्तबीज — विस्फोट ?

जगत — उत्पादन में हो रहा है !

रक्तबीज — हत्या ?

जमाल — हिंसा की हो रही है

रक्तबीज — असन्तोष ?

जगत — अमन में समा गया

रक्तबीज — तो सब कुछ बदल गया है ?

जगत–जमाल — हाँ !

रक्तबीज — स्वर भी ?

जगत — बदल रहे हैं।

रक्तबीज — अब ?

जमाल —

जगत —

रक्तबीज —

जगत —

रक्तबीज —

जमाल —

जगत —

जमाल —

जगत —

रक्तबीज —

जगत–जमाल —

रक्तबीज —

जगत–जमाल —

रक्तबीज —

जगत — हाँ, तुम्हें परास्त करने का यही मूलमत्र है ।

रक्तबीज — किन्तु मैं परास्त नहीं हूँ ।

जमाल — जीत तुम्हारी नहीं हुई है ।

जगत — हम तुम्हारी गिरफ्त से बाहर हैं ।

रक्तबीज — यही तो अफसोस है । किन्तु मैं फिर भी महान् हूँ । मेरा वैभव मेरे साथ है । मैं परास्त नहीं हो सकता— मैं परास्त नहीं हो सकता ।

(कहते हुये मच से बाहर हो जाता है ।)

(जगत जमाल हँसते हैं ।)

जगत — बेचारा रक्तबीज !

जमाल — भीतर से टूटा हुआ ।

जगत — बाहर से अपने को जोडने का प्रयत्न कर रहा है ।

जमाल — ऐ खुदावन्द ! ऐसे लोगो को रोशनी अता कर ।

जगत — इन्हे माफ कर दो प्रभो !

जमाल — क्योकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं ?

जगत — इन्हे अन्धकार से बाहर निकालो प्रभो !

जमाल — इन्हे रोशनी अता कर खुदावन्द—रोशनी अता कर ।

(जगत प्रार्थना करने की मुद्रा मे ओर जमाल नमाज़ पढ़ने की मुद्रा मे बैठ जाता है । साइक पर रोशनी की किरण उभर जाती है । गूँजते हुये स्वरो मे श्लोक उभरता है ।)

असतो मा सद् गमय्
मृत्योर्मा अमृतम्गमय्
तमसोर्मा ज्योर्तिगमय्

(पर्दा गिरता है ।)



मदन शर्मा

नाटक के क्षेत्र में सुपरिचित नाम। आपके नाटक देश के सभी भागों में मंचित पुरस्कृत एवं अनुवादित।

दूरदर्शन व आकाशवाणी से अखिल भारतीय स्तर पर प्रसारित।

नाटकों के लिए दो बार (1975 व 1990) आकाशवाणी पुरस्कार से सम्मानित।

देश की सभी प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ निरन्तर प्रकाशित।

सम्प्रति कार्यक्रम/अधिकारी
आकाशवाणी, जयपुर